



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 106]

नई दिल्ली, सोमवार, मार्च 9, 2009/फाल्गुन 18, 1930

No. 106]

NEW DELHI, MONDAY, MARCH 9, 2009/PHALGUNA 18, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 मार्च, 2009

अंतिम जांच परिणाम

विषय : ईरान, मलेशिया, कोरिया आरओके, थाइलैंड, यूएई तथा वियतनाम से कॉम्पेक्ट डिस्क-रिकार्डबल (सीडी-आर) के आयात से संबंधित पाटनरोधी जांच के अंतिम जांच परिणाम।

सं. 14/9/2007-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान तथा उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

क. पृष्ठभूमि एवं जांच शुरूआत :

1. ऑप्टिकल डिस्क मैन्युफैक्चरर्स वेलफेयर एसोसिएशन (ओडीएमडब्ल्यूए), नई दिल्ली (जिन्हें एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) ने निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) के अनुसरण में एक आवेदन प्रस्तुत किया है जिसमें ईरान, मलेशिया, कोरिया आरओके, थाइलैंड, यूएई तथा वियतनाम (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल की अथवा वहां से निर्यातित कॉम्पेक्ट डिस्क-रिकार्डबल (सीडी-आर) (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के पाटन का आरोप लगाया गया है और संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए पाटनरोधी जांच प्रारंभ करने का अनुरोध किया गया है। प्राधिकारी ने ईरान, मलेशिया, कोरिया आरओके, थाइलैंड, यूएई तथा वियतनाम के दूतावासों को सूचित किया था। नियम 5(5) के अनुसार संबद्ध देशों के दूतावासों को पूर्णतः प्रलेखित याचिका प्राप्त होने के बारे में सूचित किया गया था।

2. और यतः प्राधिकारी घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्यों के आधार पर किसी आरोपित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव को निर्धारित करने तथा पाटनरोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश करने, जिसकी यदि वसूली की जाती है तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए उपर्युक्त

नियमावली के उप नियम 5(5) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए दिनांक 12 सितंबर, 2007 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जो भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई थी।

3. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हुए दिनांक 13 दिसंबर, 2007 की अधिसूचना द्वारा अपने प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित किए थे और प्राधिकारी की इन सिफारिशों पर कार्रवाई करते हुए राजस्व विभाग ने दिनांक 13 मार्च, 2008 की अपनी अधिसूचना सं. 34/2008-सीमाशुल्क द्वारा संबद्ध वस्तु पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाया था।

### (ख) प्रक्रिया

4. प्राधिकारी द्वारा उक्त जांच की शुरुआत करने संबंधी सार्वजनिक सूचना जारी करने के पश्चात् इस जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है:-

- I. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पत्रों के अनुसार भारत में संबद्ध देश के दूतावासों, संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों, आयातकों और घरेलू उद्योग को दिनांक 12.09.2007 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति भेजी और उनसे उक्त अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया गया था।
- II. प्राधिकारी ने उक्त नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय अंश की प्रतियां प्रदान कीं।
- III. भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत करने के बारे में सूचना दी गई और उनसे यह अनुरोध किया गया कि वह अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली का उत्तर निर्धारित समय के भीतर देने की सलाह दें। निर्यातकों के नाम एवं पत्रों सहित निर्यातकों को भेजे गए पत्रों तथा प्रश्नावली की एक प्रति भी संबद्ध देशों के दूतावासों को भेजी गई।
- IV. नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना मांगने के लिए प्राधिकारी द्वारा एक प्रश्नावली भेजी गई थी। प्राधिकारी ने वियतनाम के निर्यातकों को एमईटी से संबंधित प्रश्नावली भेजी।
- V. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएण्डएस) से जांच की अवधि सहित पिछले 3 वर्षों के दौरान संबद्ध वस्तु के आयातों का ब्योरा प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया।

- VI. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश उसके द्वारा रखी गयी सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखे और उसे हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु उपलब्ध कराया।
- VII. सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों(जीएएपी) पर आधारित आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर उत्पादन की ईष्टतम लागत तथा भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकाली गयी थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या घरेलू उद्योग को हुई क्षति की समाप्ति के लिए पाटन मार्जिन के कम पाटनरोधी शुल्क पर्याप्त होगा।
- VIII. जांच शुरुआत अधिसूचना की प्रतिक्रिया के रूप में निम्नलिखित तीन निर्यातकों ने अपने उत्तर प्रस्तुत किए थे। क्रम सं. 3 पर उल्लिखित निर्यातक ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के पत्रों का कोई उत्तर नहीं दिया और कमियों को दूर कर लिया। प्राप्त उत्तरों में अत्यधिक कमियाँ थीं, अतः उत्तर पर विचार नहीं किया गया और निर्यातक को असहयोगी मान लिया गया है। जहां तक क्रम सं. 1 तथा 2 में उल्लिखित निर्यातकों का संबंध है, सूचना का सत्यापन उनके मूल रिकार्डों से किया गया और संगत सूचना पर इस जांच परिणाम में विचार किया गया है।
1. मै. पैन स्टार इलेक्ट्रॉनिक्स कं.लि., थाइलैण्ड
  2. मै. राइटैक वियतनाम कं. लि., वियतनाम
  3. मै. न्यूस्टार डिजिटल द. कोरिया
- IX. अन्य निर्यातक एवं आयातक जिन्होंने सूचना प्रस्तुत नहीं की है, उन्हें असहयोगी निर्यातक एवं आयातक माना जा रहा है।
- X. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने दिनांक 13 दिसंबर 2007 की प्रारम्भिक जांच परिणाम की प्रतियां प्रतिवादी आयातकों तथा संबद्ध वस्तु के प्रयोक्ताओं सहित सभी हितबद्ध पक्षकारों, संबद्ध देशों के भारत स्थित दूतावासों एवं घरेलू उद्योग को भिजवाई थीं और हितबद्ध पक्षकारों से प्रारम्भिक जांच परिणाम पर उनकी टिप्पणियां आमंत्रित कीं थीं।
- XI. सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से प्राधिकारी ने दिनांक 4 मार्च, 2008 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया था। सार्वजनिक सुनवाई में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा मौखिक रूप से किए गए निवेदनों को, जिन्हें लिखित में उद्धृत किया गया, को इस जांच के प्रयाजनार्थ रिकार्ड में शामिल किया गया है।
- XII. उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसरण में इस जांच परिणाम में जिन अनिवार्य तथ्यों/आधारों पर विचार किया गया, उन्हें ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के

समक्ष प्रकट किया गया और उनसे प्राप्त टिप्पणियों पर भी इस जांच परिणाम में विधिवत विचार किया गया है।

XIII. जांच में 1 अप्रैल, 2006 से 30 जून, 2007 तक की अवधि (पीओआई) शामिल थी। क्षति के संबंध में रुझानों की जांच में अप्रैल 2003- मार्च 2004, अप्रैल 2004- मार्च 2005 और अप्रैल 2005- मार्च 2006 और जांच अवधि शामिल थी।

XIV. घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों के संबंध में उनके द्वारा प्रस्तुत गोपनीयता संबंधी दावों की जांच की गई है। लागत निर्धारण, ग्राहकों, कीमतों से संबंधित आंकड़ों को गोपनीय माना गया है। जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु की मात्रा से संबंधित सूचना गोपनीय नहीं मानी गयी है। निर्यातक के गोपनीयता संबंधी दावों की जांच की जा रही है। निर्यातकों द्वारा गोपनीय रूप से प्रस्तुत सूचना को गोपनीय माना गया है।

XV. \*\*\*\*\*से इस जांच परिणाम में घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का पता चलता है और प्राधिकारी ने उसे नियमानुसार गोपनीय ही माना है।

#### ग. विचाराधीन उत्पाद

5. इस जांच में विचाराधीन उत्पाद कॉम्पैक्ट डिस्क-रिकार्डेबल (सीडी-आर) है।

6. सीडी-आर एक पॉलीकार्बोनेट डिस्क है। पॉलीकार्बोनेट डिस्क में एक ओर एक स्पाइरल ग्रूव होती है, जिसमें होकर कोई जानकारी लिखने अथवा पढ़ने के लिए लेजर पुंज गुजरता है। डिस्क में स्पाइरल ग्रूव की तरफ वनस्पति आधारित जैविक रंजक की एक तह की पतली कोटिंग होती है और उस पर चांदी, चांदी की मिश्रधातु अथवा सोने की पतली चमकदार परत होती है। अंत में धातु परावर्तक के ऊपर फोटो-पॉलीमराइजेबल लेकर की एक रक्षक परत चढ़ाकर इसे यूवी इर्रडिएशन से सुरक्षित कर दिया जाता है, ऐसी डिस्क पर रिकॉर्डिंग केवल एक बार की जा सकती है। अतः इस डिस्क को "वर्म"(एक बार लिखें, अनेक बार बढ़ें) किस्म की डिस्क कहा जाता है। यह डिस्क डिजिटल डाटा अथवा संगीत के लिए एक ऑप्टिकल स्टोरेज माध्यम है।

**मास्टरिंग:** ऑप्टिकल डिस्क की मास्टर प्रति बनाने की प्रक्रिया, जिसे सामान्यतः "मास्टरिंग" कहा जाता है, वह होती है, जिसमें इसके अंतिम चरण में निकल अथवा इसके समान किसी धात्विक मास्टर अर्थात् "स्टैम्पर" तैयार किया जाता है। इसके बाद आने वाली मोल्डिंग प्रक्रिया में स्टैम्पर का मोल्ड के रूप में उपयोग करके उससे ऑप्टिकल डिस्क की अनेक प्रतियां तैयार कर ली जाती हैं।

**मोल्डिंग:** इसमें सबसे पहले एक पॉलीकार्बोनेट प्लास्टिक सबस्ट्रेट आता है जिसमें एक उथली स्पाइरल ग्रूव होती है जो डिस्क के भीतरी छोर से उसके व्यास पर चलकर बाहरी छोर तक जाती है।

**डाई कोटर:** इस सेक्शन में ब्लैंक सबस्ट्रेट के ऊपर वानस्पतिक रंजक रिकार्डिंग लेयर (एजेडओ) चढ़ाई जाती है। डाई स्पिन कोटिंग का प्रयोग करके चढ़ाई जाती है और धात्विक तह डीसी स्पटरिंग के माध्यम से।

**स्पटर (मैटलाइजिंग):** डिस्क के ऊपर एक धात्विक परावर्तक परत (चांदी) चढ़ाई जाती है।

**बॉर्डिंग:** अंतिम रूप से डिस्क तैयार करने के लिए रिकार्डिंग तथा डमी साइड (सिंगल साइडेड के लिए) को एक एडहेसिव से आपस में चिपका दिया जाता है। कुछेक सिंगल साइडेड डिस्क में डमी साइड पर सजावट कर दी जाती है अथवा अतिरिक्त परतें चढ़ा दी जाती हैं, ताकि उन पर इंकजेट, थर्मल ट्रान्सफर अथवा री-ट्रांसफर द्वारा लेवलिंग की जा सके। चिपकाने की प्रक्रिया में हॉट मेल्ट, यूवी कटिऑनिक अथवा फ्री रेडिकल प्रोसेस का प्रयोग किया जाता है।

**प्रिंटिंग:** इसके बाद स्क्रीन प्रिंटिंग विधि द्वारा अपेक्षित प्रिंटिंग डिजाइन चढ़ाया जाता है।

**सीडी-आर की बनावट:** न केवल सूचना को लिखने बल्कि उसे बार-बार लिखने को सुविधाजनक बनाने की दृष्टि से सीडीआर-आरडब्ल्यू सीडीआर+आरडब्ल्यू डिस्क की बनावट सीडीआर-आर तथा सीडीआर+आरडब्ल्यू (रिकॉर्डेबल) की बनावट की तुलना में अधिक जटिल होती है। रिकॉर्डेबल डिस्क की तरह री-राइटेबल डिस्क में भी सिंगल साइड होती है। रीराइटेबल डिस्क की रिकॉर्डिंग साइड में भी पॉलीकार्बोनेट प्लास्टिक सबस्ट्रेट की अनेक परतें होती हैं, जिसमें एक उथली स्पाइरल ग्रूव होती है, जो भीतरी छोर से चलकर डिस्क के व्यास के साथ बाहरी छोर तक जाती है।

7. इसके बाद एक डाइइलेक्ट्रिक परत (जिंक सल्फाइड अथवा सिलिकॉन डाई ऑक्साइड) होती है, जिसके बाद एक फेज चेंज एलॉय रिकार्डिंग परत (इण्डियम, सिल्वर, टेल्यूरियम तथा एण्टीमनी या जर्मेनियम, टेल्यूरियम एवं एंटीमनी) होती है, उस पर एक और डाइइलेक्ट्रिक परत एवं एक मेटल परावर्तक परत (सिल्वर, सिल्वर एलॉय, एल्युमिनीयम) होती है। डाइ इलेक्ट्रिक परतों के ऊपर अथवा नीचे अतिरिक्त परतें (जर्मेनियम नाइट्राइड, सिलीकॉन कार्बाइड, सिलीकॉन डाई ऑक्साइड, सिलीकॉन नाइट्राइड, जिंक सल्फाइड, एण्टीमनी टेल्युराइड एवं अन्य) भी चढ़ाई जा सकती हैं।

8. डमी साइड एक प्लेट पॉलीकार्बोनेट प्लास्टिक सबस्ट्रेट की बनी होती है, जिसमें कभी-कभी धातु की एक अतिरिक्त परत भी होती है। इन साइडों को एक एडहेसिव के माध्यम से आपस में चिपका कर एक डिस्क बना दी जाती है।

9. यह उत्पाद आईटीसी(एचएस) तथा सीमाशुल्क वर्गीकरण सं. 8523 के अंतर्गत वर्गीकृत है। संबद्ध उत्पाद का आयात सीमाशुल्क वर्गीकरण सं. 8523 के अंतर्गत उपशीर्ष 85239050 के तहत किया जा रहा है।

तथापि उपर्युक्त वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और जांच पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।

#### घ. समान वस्तु

10. घरेलू उद्योग द्वारा "सीडी-आर" का विनिर्माण किया जाता है जो विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है। संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं तुलनीय हैं और भौतिक, तकनीकी गुणावगुणों, कार्यों एवं प्रयोगों के रूप में तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। अतः, वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ पाटनरोधी नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित कॉम्पैक्ट डिस्क-रिकॉर्डेबल को संबद्ध देशों से आयातित डिस्क-रिकॉर्डेबल के समान वस्तु माना जा रहा है।

#### ङ घरेलू उद्योग की स्थिति एवं जाच की शुरुआत

11. यह आवेदन ऑप्टिकल डिस्क मैनुफेक्चरर्स वेलफेयर एसोसिएशन, नई दिल्ली (ओडीएमए) द्वारा दायर किया गया है, जिसके भारत में संबद्ध वस्तुओं के 8 उत्पादक हैं। संबद्ध वस्तुओं के चार उत्पादक आवेदन में आवेदक के रूप में संबद्ध हैं और ओडीएमए के चार अन्य सदस्यों ने याचिका का समर्थन किया है। अतः आवेदक प्रत्यक्ष समर्थन करने वाले घरेलू उत्पादकों का भारत में संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादन में 90% से अधिक योगदान है। इसके अतिरिक्त, तीन कंपनियां जिन्होंने मिलकर आवेदन किया है, नियमों के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग बनती हैं।

#### च. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

12. नियम 6(3) के अंतर्गत आवेदन का प्रावधान :- मै. राइटेक वियतनाम कं.लि. ने कहा है कि नियम 6 के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा ज्ञात निर्यातकों को अद्यतन आवेदन जिसके आधार पर जांच शुरू की गई थी, का संपूर्ण पाठ उपलब्ध कराया जाना अनिवार्य है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 6(3) की अपेक्षानुसार निर्यातकों एवं संबद्ध देशों की सरकारों को आवेदन की प्रतियां प्रदान की गई थीं। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक फाइल, जिसे सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुला रखा गया था, में रखकर सूचना एवं साक्ष्य (अगोपनीय रूपांतर) को उपलब्ध रखा गया था।

13. धारा 9 (3) के अनुसार पाटनरोधी शुल्क का भूतलक्षी प्रभाव से अधिरोपण:- घरेलू उद्योग ने जांच शुरुआत के समय अनुरोध किया था कि सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 (3) के अनुसार पाटनरोधी शुल्क भूतलक्षी प्रभाव से लगाया जाए। मै. राइटैक वियतनाम कंपनी लि. ने इसका विरोध किया था। तथापि तत्पश्चात् प्रकटीकरण विवरण जारी किए जाने से पूर्व घरेलू उद्योग ने शुल्क को भूतलक्षी प्रभाव से लगाने का अपना अनुरोध वापस ले लिया था। घरेलू उद्योग के अनुरोध के मद्देनजर प्राधिकारी ने शुल्क को भूतलक्षी प्रभाव से लगाए जाने के गुणदोषों के बारे में कोई निर्णय नहीं लिया है।

14. प्रकटीकरण विवरण के उपरांत एपीजे-एसएलजी ने मेसर्स पेनस्टार इलेक्ट्रॉनिक कं.लि. की ओर से अभ्यावेदन प्रस्तुत किया है कि "प्रकटीकरण विवरण में प्रस्तावित दृष्टिकोण कानून के विपरीत और अन्य मामलों में इन्हीं परिस्थितियों के अंतर्गत अपनाए गए दृष्टिकोण से सर्वथा भिन्न है।" इस संबंध में सभी फुली ड्रॉन यार्न (दिनांक 26.12.2006 के अंतिम जांच परिणाम), सिल्क फैब्रिक्स (दिनांक 15.11.2006), विस्कोस फिलामेन्ट यार्न (4.4.2006) तथा पॉली विनिल क्लोराइड (26.12.2007) के अंतिम जांच परिणाम की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। यह भी कहा गया है कि "किए गए प्रकटीकरण में दृष्टिकोण के अंतर्गत किए गए ऐसे आमूल परिवर्तन के कारणों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।" आगे यह भी निवेदन किया गया है कि इस मामले में अपनाए गए दृष्टिकोण का अर्थ "निर्यात कीमत" की अवधारणा को अस्वीकार करना होगा जिसके वर्तमान तथा भावी मामलों में व्यापक निहितार्थ होंगे।

15. प्राधिकारी ने मेसर्स एपीजे-एसएलजी द्वारा मेसर्स पेनस्टार इलेक्ट्रॉनिक कं.लि. तथा मेसर्स राइटैक वियतनाम कंपनी लिमिटेड की ओर से किए गए निवेदनों को नोट किया है और प्राधिकारी का यह अभिमत है कि इस जांच में निर्यातकों द्वारा प्रकट "निर्यात कीमतों" को जिन तथ्यों एवं परिस्थितियों के अंतर्गत अस्वीकार कर दिया गया है, उनका विवेचन इस जांच परिणाम के खण्ड छ: में किया गया है और प्रकटीकरण विवरण में भी उन्हें प्रकट किया गया था। तथापि, पुनः स्पष्ट किया जाता है कि जब निर्यातकों एवं आयातकों के बीच विरोध के विषय प्राधिकारी के ध्यान में आए हैं तो उनके द्वारा प्रस्तुत निर्यात कीमतों को यथारूप स्वीकार नहीं किया जा सकता।

**छ: पाटन मार्जिन के परिकलन की पद्धति**

**सामान्य मूल्य**

**छ: 1. थाईलैंड के लिए सामान्य मूल्य**

16. जांच शुरुआत अधिसूचना के उत्तर में थाईलैंड के एक निर्यातक अर्थात् मै. पेन स्टार इलेक्ट्रॉनिक्स कं. लि. ने निर्यातक प्रश्नावली के संबंध में सूचना प्रस्तुत की थी। सूचना का सत्यापन इस निर्यातक के रिकार्ड से किया गया था।

17. सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ प्राधिकारी ने मै. पैनस्टार इलेक्ट्रॉनिक्स कं.लि. द्वारा प्रस्तुत घरेलू बिक्री एवं उत्पादन लागत संबंधी आंकड़ों की जांच की है। जांच करने पर यह पाया गया है कि केवल 45% घरेलू बिक्री लाभदायी थी। अतः सामान्य मूल्य के परिकलन के प्रयोजनार्थ केवल लाभदायी बिक्री से संबंधित सौदों पर ही विचार किया गया। कारखाना-द्वारा कीमत ज्ञात करने के लिए निर्यातक द्वारा दावा किए गए व्ययों को समायोजित किया गया। यह नोट किया गया है कि निर्यातक ने भारत को इस वस्तु का निर्यात केवल एक किस्म की पैकिंग में किया है। इन तथ्यों पर विचार करने पर भारित औसत सामान्य मूल्य \*\*\*\* डॉलर प्रति 1000 नग बनता है।

## छ.2 कोरिया आरओके के लिए सामान्य मूल्य

18. जांच शुरूआत अधिसूचना के उत्तर में कोरिया आरओके के एक निर्यातक मेसर्स न्यूस्टार डिजिटल ने निर्यातक प्रश्नावली के संबंध में सूचना प्रस्तुत की है। तथापि प्रस्तुत की गई सूचना में अत्यधिक कमियां पाई गईं और निर्यातक ने कमियों में कोई सुधार नहीं किया। अतः इस सूचना पर विचार नहीं किया गया है।

19. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार कच्ची सामग्रियों की अंतर्राष्ट्रीय कीमत एवं खपत घरेलू उद्योग के प्रमुख उत्पादक की परिवर्तन लागत के आधार पर कोरिया आरओके के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए 5% की दर से लाभ जोड़ा गया है। इस पद्धति से कोरिया आरओके के लिए सामान्य मूल्य \*\*\*\*अम. डा. प्रति 1000 नग बनता है।

## छ.3 वियतनाम के लिए सामान्य मूल्य

20. जांच शुरूआत के स्तर पर प्राधिकारी ने पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ वियतनाम को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानकर इस परिकल्पना के आधार पर कार्रवाई की। जांच शुरूआत किए जाने पर प्राधिकारी ने वियतनामी उत्पादकों को जांच शुरूआत संबंधी सूचना का उत्तर देने और उनके बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी दर्जे के निर्धारण के संगत सूचना मुहैया कराने की सलाह दी। तत्पश्चात् हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों को ध्यान में रखकर, सहयोगी निर्यातक द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्राप्त न कर पाने की स्थिति में नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 के अनुसरण में थाइलैंड का चयन बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के रूप में किया गया।

21. प्राधिकारी ने नियमावली की धारा 9 (1) (ग) और अनुबंध-1 के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली की प्रतियां प्रेषित कीं। प्रश्नावली के उत्तर में मै.रिटेक वियतनाम कं. लि. ने गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की परिकल्पना का खण्डन करने के लिए सूचना उपलब्ध कराई।



#### छ.4 मेसर्स रिटेक वियतनाम कं.लि. का बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा

22. सहयोगी निर्यातक मेसर्स रिटेक वियतनाम कं. लि. ने गैर-बाजार अर्थव्यवस्था परिकल्पना का खण्डन करने के लिए अपेक्षित सभी प्रकार की सूचना प्रस्तुत की थी। जहाँ तक विचाराधीन उत्पाद का संबंध है, इसके स्वामित्व तथा कीमत निर्धारण, लागत, निविष्टियों तथा उत्पादन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय प्रक्रिया में राज्य के हस्तक्षेप का कोई संकेत प्राधिकारी को प्राप्त नहीं हुआ। चूंकि निर्यातक ने एक नई यूनिट स्थापित की है अतः पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से उत्पन्न कोई विकृति भी नहीं देखी गई। नियमावली के नियम 8(3) में यथा उल्लिखित अन्य मापदण्डों की भी जांच की गई। तथापि ऐसी कोई सामग्री प्राधिकारी के ध्यान में नहीं आई, जिससे यह ज्ञात होता हो कि निर्यातक बाजार अर्थव्यवस्था संकेतों के अनुसार कार्य कर रहा है। अतः प्राधिकारी ने इस जांच के प्रयोजनार्थ इस निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था दर्जा प्रदान किया है।

23. यह नोट किया गया है कि निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान कोई घरेलू बिक्री नहीं की है। अतः सामान्य मूल्य सहयोगी निर्यातक द्वारा उत्पादन लागत के बारे में उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा 9 (1) (ग) के अनुसार संरचित किया गया है। इस विधि से सामान्य मूल्य \*\*\*\*डॉलर प्रति 1000 नग बनता है।

#### छ.5 ईरान के लिए सामान्य मूल्य

24. ईरान के किसी भी निर्यातक ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है। किसी प्रत्युत्तर के अभाव में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों का सहारा लिया है। इस प्रयोजनार्थ, सामान्य मूल्य का निर्धारण कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमत व खपत, घरेलू उद्योग के प्रमुख उत्पादक की परिवर्तन-लागत को ध्यान में रखते हुए किया गया है। सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए 5% की दर से लाभ को जोड़ा गया है। इस विधि से ईरान के लिए सामान्य मूल्य \*\*\*\* अम.डा. प्रति 1000 नग निर्धारित किया गया है।

#### छ.6 मलेशिया के लिए सामान्य मूल्य

25. मलेशिया के किसी भी निर्यातक ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है। किसी प्रत्युत्तर के अभाव में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों का सहारा लिया है। इस प्रयोजनार्थ, सामान्य मूल्य का निर्धारण कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमत व खपत, घरेलू उद्योग के प्रमुख उत्पादक की परिवर्तन लागत को ध्यान में रखते हुए किया गया है। सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए 5% की दर से लाभ को जोड़ा गया है। इस विधि से ईरान के लिए सामान्य मूल्य \*\*\*\* अम.डा. प्रति 1000 नग निर्धारित किया गया है।

## छ.7 यूएई के लिए सामान्य मूल्य

26. यूएई के किसी भी निर्यातक ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है। किसी प्रत्युत्तर के अभाव में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों का सहारा लिया है। इस प्रयोजनार्थ, सामान्य मूल्य का निर्धारण कच्चे माल की अंतरराष्ट्रीय कीमत व खपत, घरेलू उद्योग के प्रमुख उत्पादक की परिवर्तन लागत को ध्यान में रखते हुए किया गया है। सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए 5% की दर से लाभ को जोड़ा गया है। इस विधि से यूएई के लिए सामान्य मूल्य \*\*\*\* अम.डा. प्रति 1000 नग निर्धारित किया गया है।

## निर्यात कीमत

## छ.8 थाइलैण्ड के लिए निर्यात कीमत

27. निर्यातक ने भारत को किए गए निर्यातों का सोदेवार ब्यौरा उपलब्ध कराया है। इन आंकड़ों का सत्यापन निर्यातक के रिकार्ड से किया गया। सत्यापन के दौरान यह देखा गया कि निर्यातक ने निर्यात सौदों का भुगतान न केवल एक से अधिक किशतों में बल्कि विभिन्न स्रोतों से भी प्राप्त किया है। जांच करने पर और निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों और डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा प्रदत्त आयात आंकड़ों की तुलना करने पर यह पाया गया कि निर्यातक द्वारा प्रदर्शित कीमतों और भारत को किए गए आयातों के बीच उल्लेखनीय अंतर है। कुछेक सौदों से संबंधित तुलना तालिका निर्यातक को उसकी टिप्पणी हेतु भिजवाई गई थी। इसके उत्तर में यह बताया गया है कि निर्यातक भारतीय प्राधिकारियों द्वारा संकलित आंकड़ों पर टिप्पणी करने की स्थिति में नहीं है। निर्यातक द्वारा सूचित कीमतों और भारत में दर्ज कीमतों के बीच अंतर से यह ज्ञात होता है कि आयातक भारत में सीमाशुल्क प्राधिकारियों को कम कीमतें घोषित कर रहे होंगे। इस तथ्य के मद्देनजर कि निर्यातक को भुगतान किशतों में प्राप्त हुआ है और एक ही सौदे के लिए एकाधिक स्रोत से प्राप्त हुआ है, निर्यातक और आयातक के बीच विरोध से इंकार नहीं किया जा सकता। यह भी नोट किया गया है कि जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा निर्यातित कुल मात्रा तथा जांच अवधि के दौरान थाइलैण्ड से भारत में किए गए आयातों की कुल मात्रा तुलनीय है। इससे ज्ञात होता है कि समूचे निर्यात थाइलैण्ड के सहयोगी निर्यातक द्वारा लेखाबद्ध किए गए।

28. उपर्युक्त को ध्यान में रखकर निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा घोषित निर्यात कीमत को स्वीकार नहीं किया है और इसके बजाए उन्होंने भारत में सूचित मूल्य के भारित औसत को विश्वसनीय माना है। तथापि कारखाना-द्वारा निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए निर्यातक द्वारा इंगित व्ययों पर विचार किया गया है। इस विधि से निबल निर्यात कीमत का परिकलन \*\*\*\*डॉलर प्रति 1000 नग किया गया है।

## छ.9 कोरिया आरओके के लिए निर्यात कीमत

### असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

29. चूंकि कोरिया के किसी भी निर्यातक ने सहयोग नहीं किया है, अतः असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण इम्पेक्स स्टेटिस्टिक्स द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों के आधार पर किया गया है। इस संबंध में इम्पेक्स स्टेटिस्टिक्स द्वारा प्रदत्त सौदेवार आयात आंकड़ों को विश्वसनीय माना गया है। निवल निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु समुद्री मालभाड़े, समुद्री बीमें, कमीशन, अंतर्देशीय मालभाड़े, प्रदत्त व्ययों एवं बैंक प्रभारों का समायोजन किया गया है। इस विधि से निवल निर्यात कीमत का परिकलन \*\*\*\* अम.डॉलर प्रति 1000 नग किया गया है।

## छ.10 वियतनाम के लिए निर्यात कीमत

30. निर्यातक ने भारत को किए गए निर्यातों का सौदेवार ब्यौरा प्रस्तुत किया है। प्रारम्भिक जांच परिणाम के उपरांत यह स्पष्ट किया गया था कि मेसर्स रिटेक वियतनाम कं. लि.(आरवीसी) अपनी वस्तुएं समुद्री मार्ग से सीधे वियतनाम से भारत भेजती हैं, तथापि बिक्री संबंधी सौदे रिटेक कार्पोरेशन, ताइवान (आरसीटी), जो एक संबद्ध कंपनी है, द्वारा चीनी ताइपेई के माध्यम से किए गए हैं। इस प्रयोजनार्थ आरवीसी ने आरसीटी को बिक्री की, जिसने तत्पश्चात् भारतीय ग्राहकों को वस्तुओं की बिक्री की। सत्यापन के दौरान यह नोट किया गया कि उपलब्ध कराए गए आंकड़ों में कुछेक विसंगतियां थीं। यह भी नोट किया गया कि कुछेक सौदों के मामले में भुगतान वाऊचर या तो उपलब्ध ही नहीं थे अथवा बिक्री सौदों से संबंधित नहीं थे। यह भी नोट किया गया है कि निर्यातक द्वारा सूचित निर्यात कीमतों और भारत में सूचित कीमतों के बीच व्यापक भिन्नता है। सहयोगी निर्यातक द्वारा सूचित कुल मात्रा वियतनाम से किए गए आयातों के बारे में भारतीय प्राधिकारियों द्वारा सूचित मात्रा से काफी अधिक है। निर्यातक द्वारा सूचित कीमतों और भारत में दर्ज कीमतों के बीच अंतर से ज्ञात होता है कि आयातक भारत में सीमाशुल्क प्राधिकारियों को कमतर कीमतें घोषित कर रहे होंगे। इस तथ्य के मद्देनजर कि निर्यातक कुछेक सौदों के भुगतान को लेखाबद्ध नहीं कर सका था, निर्यातक एवं आयातक के बीच विरोध से इंकार नहीं किया जा सकता। उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए निर्यातक द्वारा सूचित निर्यात कीमत को विश्वसनीय नहीं माना जा सकता। निर्यात कीमत के प्रयोजनार्थ आयात संबंधी आंकड़ों में सूचित मात्रा तथा मूल्यों को विश्वसनीय माना गया है। तथापि कारखाना-द्वारा निर्यात कीमत के परिकलन हेतु सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रकट व्ययों पर विचार किया गया है। इस विधि से निवल निर्यात कीमत \*\*\*\* अम. डॉलर प्रति 1000 नग बनती है।

## छ.11 ईरान के लिए निर्यात कीमत

31. जहां तक असहयोगी निर्यातकों का संबंध है, इम्पेक्स स्टेटिस्टिक्स द्वारा उपलब्ध कराए गए आयात संबंधी आंकड़ों को विश्वसनीय माना गया है। निवल निर्यात कीमत का निर्धारण

करने के लिए समुद्री मालभाड़े, समुद्री बीमे, कमीशन, अंतर्देशीय मालभाड़े, पत्तन व्यय तथा बैंक प्रभारों से संबंधित समायोजन किए गए हैं। इस विधि के अनुसार निवल निर्यात कीमत का परिकलन \*\*\*\* अम.डॉ. प्रति 1000 नग किया गया है।

### मलेशिया के लिए निर्यात कीमत

32. जहां तक असहयोगी निर्यातकों का संबंध है, इम्पेक्स स्टेटिस्टिक्स द्वारा उपलब्ध कराए गए आयात संबंधी आंकड़ों को विश्वसनीय माना गया है। निवल निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए समुद्री मालभाड़े, समुद्री बीमे, कमीशन, अंतर्देशीय मालभाड़े, पत्तन व्यय तथा बैंक प्रभारों से संबंधित समायोजन किए गए हैं। इस विधि के अनुसार निवल निर्यात कीमत का परिकलन \*\*\*\* अम.डॉ. प्रति 1000 नग किया गया है।

### छ.12 यूएई के लिए निर्यात कीमत

33. जहां तक असहयोगी निर्यातकों का संबंध है, इम्पेक्स स्टेटिस्टिक्स द्वारा उपलब्ध कराए गए आयात संबंधी आंकड़ों को विश्वसनीय माना गया है। निवल निर्यात कीमत का निर्धारण करने के लिए समुद्री मालभाड़े, समुद्री बीमे, कमीशन, अंतर्देशीय मालभाड़े, पत्तन व्यय तथा बैंक प्रभारों से संबंधित समायोजन किए गए हैं। इस विधि के अनुसार निवल निर्यात कीमत का परिकलन \*\*\*\* अम.डॉ. प्रति 1000 नग किया गया है।

### छ.13 पाटन मार्जिन

34. ऊपर निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमतों के आधार पर पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नलिखित तालिका के अनुसार किया गया है:-

मूल्य : अम.डॉ. प्रति 000 नग

	थाइलैंड	कोरिया आरओक	वियतनाम	ईरान	यूएई
सामान्य मूल्य	****	****	****	****	****
निर्यात कीमत	****	****	****	****	****
भारित पाटन मार्जिन	****	****	****	****	****
पाटन मार्जिन(%)	22.76	75.63	54.65	68.92	93.73

35. इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन अत्यधिक तथा न्यूनतम स्तर से ऊपर हैं।

## ज. क्षति निर्धारण हेतु विधि तथा कारणात्मक संबंधों की जांच

### ज.1 क्षति निर्धारण

36. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों से किए गए समस्त आयातों को पाटित आयात माना गया है।

### ज.2 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

37. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए हैं:-

- (क) विचाराधीन उत्पाद के आयातों में निरपेक्ष रूप से तथा भारत में उत्पादन के सापेक्ष अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- (ख) जांच की प्रस्तावित अवधि के दौरान भी प्रति माह औसत आयातों में अत्यधिक वृद्धि हुई।
- (ग) आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में उल्लेखनीय कीमत कटौती हो रही है। इसके परिणामस्वरूप आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में मंदी आई है।
- (घ) यद्यपि इस अवधि के दौरान क्षमता, उत्पादन तथा बिक्री में वृद्धि हुई है, परंतु इन मापदण्डों में हुई वृद्धि इस उत्पाद की मांग में प्रत्याशित वृद्धि के परिणामतः हुई। वास्तव में, घरेलू उद्योग ने बाजार हिस्सा गंवाया है।
- (ङ.) आयातों के कारण निर्मित अत्यधिक दबाव के कारण इस अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में अत्यधिक गिरावट आई है।
- (च) इस अवधि के दौरान निवेश से प्राप्त आय तथा नकद प्रवाह में भी उल्लेखनीय गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को नकारात्मक वृद्धि का सामना करना पड़ रहा है।
- (छ) घरेलू उद्योग की मालसूचियों में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- (ज) यह देखते हुए कि बिक्री कीमत में कमी आने का एकमात्र कारण आयात कीमतों में आई गिरावट है, पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।

### ज.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

38. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग द्वारा व्यक्त विचारों को नोट किया है और इस जांच परिणाम में क्षति निर्धारण एवं कारणात्मक संबंध के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ अनिवार्य कारकों की जांच की है।

### ज.4 क्षति का संचयी मूल्यांकन

39. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) में यह अपेक्षा की गई है कि जहां एक से अधिक देश से एक साथ किसी उत्पाद का आयात पाटनरोधी जांचों के अध्यक्षीन होता है वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के संचयी प्रभाव का मूल्यांकन करेंगे, बशर्ते यह निर्धारित होता हो कि

(क) अलग-अलग देशों से आयातों की मात्रा न्यूनतम स्तर से अधिक है:

(ख) अलग-अलग देशों के विरुद्ध पाटन मार्जिन 2% से अधिक है; और

(ग) आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन, आयातित वस्तुएं और समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की परिस्थितियों के आलोक में उचित है।

40. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटित आयात संबद्ध देशों सहित अनेक देशों से एक साथ भारतीय बाजार में प्रवेश कर रहे हैं। अतः इन स्रोतों से पाटित आयातों की वजह से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संचयी मूल्यांकन के मुद्दे की उपर्युक्त मानदंडों के संबंध में जांच की है और यह पाया गया है कि:

- i) प्रत्येक संबद्ध देशों/क्षेत्रों से पृथक-पृथक उत्पादों के पाटन का मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है;
- ii) प्रत्येक संबद्ध देशों/क्षेत्रों से पृथक-पृथक उत्पादों के आयात की मात्रा न्यूनतम सीमा से अधिक है;
- iii) संबद्ध देशों से आयात, बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में उल्लेखनीय कटौती कर रहे हैं;

41. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी प्रस्ताव करते हैं कि इस मामले में क्षति का संचयी आकलन उपर्युक्त है क्योंकि संबद्ध देशों से पृथक-पृथक उत्पादों के निर्यात स्वयं अपनों के बीच तथा भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित समान वस्तुओं के साथ सीधे प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

### ज.5 क्षति और कारणात्मक संबंध की जांच

42. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह प्रावधान है कि क्षति जांच में "..... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी प्रासंगिक तथ्यों पर विचार करते हुए ....." उन कारकों जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चलता है की जांच अंतर्ग्रस्त होगी। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय यह जांच करनी आवश्यक समझी गई है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा उल्लेखनीय कीमत कटौती की गई है, अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों को उल्लेखनीय स्तर तक कम करने अथवा कीमत वृद्धि को रोकने के लिए है जो कि अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक बढ़ गई होती।

43. भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए उन संकेतकों जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है यथा उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन का परिमाण और मार्जिन आदि पर उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है।

44. उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा आदि जैसे ऊपर दर्शाए गए सभी आर्थिक मानदंड जो घरेलू उद्योग को प्रभावित करते हैं की निम्नानुसार जांच की गई है।

### ज.6 पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव: आयात मात्राएं और बाजार हिस्सा

#### क) आयात मात्रा

45. सीडीआर सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 8923.90.50, के तहत विशिष्ट रूप से आयात योग्य है, तथापि, इम्पेक्स सांख्यिकी से आयातों के सौदे-वार आंकड़े दर्शाते हैं कि आयात विभिन्न सीमाशुल्क टैरिफ शीर्षों के तहत किए गए हैं। डीजीसीआईएंडएस द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों में आबद्ध वर्गीकरण के अधीन किए गए आयातों से इतर आयात को, अभिग्रहित किया गया है, इसलिए, इम्पेक्स सांख्यिकी के आंकड़ों पर विश्लेषण के लिए निर्भर रहा गया है।

46. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी से यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत के सापेक्ष, पाटित आयातों में कोई उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

47. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने इम्पेक्स सांख्यिकी के आंकड़ों से प्राप्त सौदावार आयात आंकड़ों पर भरोसा किया है। संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा का विश्लेषण असंबंधित उत्पादों के आंकड़ों की छंटनी के बाद इम्पेक्स सांख्यिकी के आंकड़ों में दिए गए आंकड़ों के आधार पर किया गया है। यह भी देखा गया है कि आयात विभिन्न पैकिंगों अर्थात् केक बॉक्स और बीओएस में किए गए थे। तथापि आयात मुख्यतः बीओएस पैक में किए गए थे।

48. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात की मात्रा को असंबंधित उत्पादों के लिए आंकड़ों को निम्नानुसार विश्लेषित किया गया है : -

**आयात मात्रा तथा संबद्ध देश का हिस्सा**

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
आयात						
ईरान	लाख नग	-	-	-	73	59
कोरिया	लाख नग	10	14	13	92	74
मलेशिया	लाख नग	102	73	38	244	195
थाइलैंड	लाख नग	4	4	7	302	242
यूएई	लाख नग	0	3	7	81	64
वियतनाम	लाख नग	-	-	-	397	317
वे देश जिन पर शुल्क लग रहा है		957	1,740	1,350	1,249	999
अन्य देश	लाख नग	25	82	28	10	8
संबद्ध देश	लाख नग	116	94	65	1,189	951
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	81	56	1,027	822
कुल आयात	लाख नग	1,097	1,916	1,442	2,447	1,958
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	175	131	223	178
बाजार हिस्सा						
ईरान	%	-	-	-	3.00	2.40
कोरिया	%	0.91	0.75	0.93	3.76	3.01
मलेशिया	%	9.26	3.80	2.62	9.98	7.99
थाइलैंड	%	0.36	0.21	0.49	12.34	9.87
यूएई	%	0.02	0.17	0.46	3.29	2.63
वियतनाम	%	-	-	-	16.21	12.97
वे देश जिन पर शुल्क लग रहा है	%	87.20	90.83	93.59	51.03	51.03
अन्य देश	%	2.24	4.25	1.91	0.39	0.39
संबद्ध देश	%	10.55	4.92	4.50	48.58	48.58
संबद्ध देशों से आयात						
उत्पादन	%	7.23	10.10	7.90	10.67	10.67
खपत	%	38.68	44.41	32.78	36.57	36.57

49. उपर्युक्त आंकड़ों से पता चलता है कि संबद्ध देशों से आयात वर्ष 2003-04 में 116 लाख से बढ़कर जांच अवधि (वार्षिकीकृत) के दौरान 951 लाख हो गए जिससे आधार वर्ष की



तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों में तेजी से वृद्धि का संकेत मिलता है। आयात संबंधी आंकड़े दर्शाते हैं कि आयातों में मुख्यतः सीडीआर-आर शामिल हैं। सीडीआर-आर डब्ल्यू के आयात कुल आयात की 1% की रेंज में थे। यह भी देखा गया है कि सीडी आर के आयात भिन्न-भिन्न पैकों में किए गए हैं। तथापि आयातों में सीडी आर मुख्यतः बल्क पैकेज में है, जो कुल आयातों का 95% थे। अन्य पैकेज केक बाक्स है। यह देखा गया है कि आयातों में समग्र रूप से वृद्धि हुई है, तथापि उत्पादन और खपत की दृष्टि से इसमें 2004-05 से जांच अवधि तक मामूली वृद्धि हुई है।

### ख) मांग, उत्पादन और बाजार हिस्सा

#### i) मांग में वृद्धि

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग	लाख नग	2,836.82	4,314.34	4,399.48	6,692.35	5,353.88
कुल आयात	लाख नग	1,097.31	1,915.70	1,442.20	2,447.45	1,957.96
अन्य भारतीय उत्पादक	लाख नग	638.12	1,006.97	1,491.42	2,510.87	2,008.70
कुल मांग	लाख नग	4,572.25	7,237.01	7,333.10	11,650.67	9,320.54

50. संबद्ध वस्तुओं की मांग का निर्धारण भारतीय उद्योग की घरेलू बिक्री और सभी देशों से आयातों को जोड़कर किया गया है। आंकड़ों की प्रवृत्ति दर्शाती है कि संबद्ध वस्तुओं हेतु मांग में आधार वर्ष से जांच अवधि तक बढ़ी थी। यह उत्पाद का स्वयं हाल में उद्गम हुआ है इसलिए इसकी मांग तेजी से बढ़ रही है।

#### ii) घरेलू उद्योग का उत्पादन

		2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
क्षमता	लाख नग	18,800	20,311	18,922	25,623	20,499
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108.04	100.65	136.29	109.04
उत्पादन	लाख नग	15,181	18,972	18,246	22,944	18,356
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	124.97	120.19	151.14	120.91
क्षमता उपयोग	%	80.75	93.41	96.43	89.55	89.55
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115.67	119.42	110.89	110.89

51. क्षमता, उत्पादन तथा क्षमता प्रयोग के संबंध में घरेलू उद्योग के आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि वर्ष 2003-04 में घरेलू उद्योग की क्षमता 18800 लाख नग थी और वार्षिकीकृत जांच अवधि में दौरान बढ़कर 20499 लाख नग हो गई थी। वर्ष 2003-04 के दौरान संबद्ध वस्तु का उत्पादन 15181 लाख नग था जिसमें 2004-05 में वृद्धि हुई और उसके बाद 2005-06 में गिरकर 18246 लाख नग रह गया तथा वार्षिकीकृत जांच अवधि में बढ़कर 18356 लाख नग हो गया।

## iii) घरेलू उद्योग की बिक्री

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग	लाख नग	2,837	4,314	4,399	6,692	5,354
निर्यात बिक्री	लाख नग	11,440	13,553	13,940	15,610	12,488

52. बिक्री संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग ने वर्ष 2003-04 के दौरान 2837 लाख नग संबद्ध वस्तु की बिक्री की और और यह वार्षिकीकृत जांच अवधि के दौरान बढ़कर 5354 लाख नग हो गई। मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में 189 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की औसत वस्तु सूची से पता चलता है कि वर्ष 2003-04 में औसत स्टॉक 97 लाख नग था जो जांच अवधि के दौरान बढ़कर 2205 लाख नग हो गया था। बिक्री दिनों की संख्या के रूप में औसत वस्तु सूची 2003-04 में 12 बिक्री दिनों के बराबर थी और मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बढ़कर 150 बिक्री दिन हो गई।

## iv) मांग तथा बाजार हिस्सा

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
अनुमानित मांग	लाख नग	4,573	7,237	7,333	11,651	9,321
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	158.27	160.37	254.80	203.83
संबद्ध देशों से आयात	लाख नग	116	94	65	1,189	951
पाटनरोधी शुल्क प्रभावित देशों से आयात	लाख नग	957	1,740	1,350	1,249	999
अन्य देशों से आयात	लाख नग	25	82	28	10	8
घरेलू उद्योग की बिक्री	लाख नग	2,837	4,314	4,399	6,692	5,354
अन्य भारतीय उद्योग का उत्पादन	लाख नग	638	1,007	1,491	2,511	2,009
मांग में बाजार हिस्सा						
संबद्ध देशों से आयात	%	2.54	1.30	0.89	10.20	10.20
पाटनरोधी शुल्क प्रभावित देशों से आयात	%	20.93	24.04	18.41	10.72	10.72
अन्य देशों से आयात	%	0.55	1.13	0.38	0.09	0.09
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	62.04	59.61	59.99	57.44	57.44
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री	%	13.95	13.91	20.33	21.55	21.55
घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत	रु./नग	7.90	4.94	4.90	5.33	5.33

53. संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इसमें मूल वर्ष की तुलना में वार्षिकीकृत जांच अवधि के दौरान 104% की वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग के बाजार अंश में, जिसमें वर्ष 2005-06 तक वृद्धि हो रही थी, जांच अवधि के दौरान भारी गिरावट आई है। इसी अवधि में संबद्ध देशों का हिस्सा 2.54% से बढ़कर 10.20% हो गया है। यह देखा

गया है कि आधार वर्ष से जांच अवधि तक घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में आधार वर्ष से गिरावट आई है।

(ग) संबद्ध देशों से पाटित आयातों का घरेलू उद्योग पर कीमत प्रभाव

(i) जांचाधीन कीमत का मूल्यांकन

निर्यात कीमत	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
संबद्ध देश	रु./नग	3.69	2.00	3.18	3.92
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	54.20	86.18	106.23
बिक्री कीमत	रु./नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	62.54	62.00	67.38
पोलीकार्बोनेट कीमत *	रु./नग	79.08	87.53	128.55	127.09
कच्ची सामग्री की लागत	रु./नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	85	116	90

\*स्रोत:- विश्व व्यापार एटलस आंकड़े

54. निर्यात कीमतों से संबंधित आंकड़ों से यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध देशों की कीमतों में मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट हुई है। वर्ल्ड ट्रेड एटलस के आंकड़ों से यह देखा गया है कि उसी अवधि के दौरान संबद्ध देशों में प्रमुख कच्ची सामग्री अर्थात् पॉलीकार्बोनेट की कीमत में वृद्धि हुई है। यदि यह माना भी जाए कि वर्ष 2003-04 में कीमतें शुरुआती चरण के कारण अधिक थी, यह पाया जाता है कि 2004-05 और 2005-06 के बीच कीमतों में तेजी से गिरावट आई है। इसके अलावा, जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्ष के बीच भी कीमतों में आधार वर्ष से कमी आई है।

(ii) कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
बिक्री कीमत घरेलू उद्योग	रु./नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	62.54	62.00	67.38
पहुंच मूल्य	रु./नग	4.02	2.08	3.18	3.92
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	51.72	79.10	97.51
कीमत कटौती	रु./नग	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
क्षति रहित कीमत	रु./नग	***	***	***	***
कम कीमत पर बिक्री	रु./नग	***	***	***	***
उत्पादन की लागत	रु./नग	***	***	***	***

55. कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत अवमूल्यन तथा कीमत ह्रास, यदि कोई है के संदर्भ में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच की गई है। इस विश्लेषण के उद्देश्य से घरेलू उद्योग के उत्पादन की भारित औसत लागत, भारित औसत निवल बिक्री आय (एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत (एनआईपी) की तुलना में संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है।

56. घरेलू उद्योग की भारित निवल बिक्री आय के निर्धारण में घरेलू उद्योग द्वारा दी जाने वाली रिबेट, छूट तथा कमीशन और प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क को शामिल नहीं किया गया है।

57. बिक्री कीमत की प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि मूल वर्ष की तुलना में इसमें वर्ष 2004-05 में 63% तथा 2005-06 में 62% की गिरावट आई, तथापि मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 67% की गिरावट आई। जांच अवधि के दौरान बिक्री कीमत के विश्लेषण से (घरेलू उद्योग के प्रमुख उत्पादक का, जिसके आंकड़ों की जांच की गई है) से यह भी पता चलता है कि बिक्री कीमत से गिरावट की घोषणा अप्रैल, 07-जून, 07 में की गई थी जब मूल वर्ष की तुलना में गिरकर 58% रह गया था।

58. कीमत कटौती का निर्धारण पूरी जांच अवधि में संबद्ध देशों से पाटित आयातों के भारित औसत पहुंच मूल्य के साथ उसी अवधि में घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री आय की तुलना के द्वारा किया गया है। इस उद्देश्य हेतु आयातों के पहुंच मूल्य का आकलन (संबद्ध वर्षों के लिए) संबद्ध देशों से आयात कीमतों के इम्पेक्स सांख्यिकीय आंकड़ों में दर्ज मूल्य में 1% प्रहस्तन प्रभार तथा लागू मूलभूत सीमाशुल्क को जोड़कर किया गया है। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से भारित औसत कटौती 22-32% के वर्ग में थी।

59. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के लिए संबद्ध देशों से आयातों की भारित औसत पहुंच कीमतों की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से की गई है। जांच अवधि के दौरान भारित औसत कम कीमत पर बिक्री 75-85% के वर्ग में थी।

### (iii) पाटित आयातों की कीमत अवमूल्यन तथा ह्रास प्रभाव:

60. संबद्ध देशों से उत्पादन की लागत, निवल बिक्री आय तथा पहुंच मूल्यों के संदर्भ में पाटित आयातों के कीमत अवमूल्यन प्रभाव की भी जांच की गई है।

61. उत्पादन लागत की प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान भारित औसत बिक्री लागत में 0.88 रु./नग की गिरावट आई जबकि उसी अवधि के दौरान बिक्री कीमत में 2.58 रु./नग की गिरावट आई है जिससे यह प्रदर्शित होता है कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की निवल बिक्री आय पर कीमतों को कम करने का अत्यधिक दबाव था।

## ज.7 अन्य क्षति मानकों की जांच

62. घरेलू उद्योग की मात्रा तथा कीमत पर पाटित आयातों के प्रभाव तथा प्रमुख क्षति संकेतकों जैसे आयातों की मात्रा तथा मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, परिणाम, क्षमता प्रयोग और बिक्री के साथ-साथ पिछले खंड में भिन्न वर्गों के बाजार हिस्से के साथ मांग पैटर्न की जांच करने के बाद अन्य आर्थिक मानकों, जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी को इंगित कर सकते हैं, का निम्नानुसार विश्लेषण किया गया है :

### लाभ तथा नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित प्रभाव

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
बिक्री (एनएसआर)	रू./नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	62.54	62.00	67.38
बिक्री की लागत	रू./नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	84.75	90.60	86.55
कर पूर्व लाभ	रू./नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	-41.55	-72.07	-22.48
कर पूर्व कुल लाभ	रू./नग	***	***	***	***
ब्याज पूर्व कुल लाभ	रू./नग	***	***	***	***
नकद लाभ	रू./नग	***	***	***	***

63. आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत गिर कर 2004-05 में 85%, 2005-06 में 91%, तथा जांच अवधि में 87% तक हो गई थी जबकि उसी अवधि के दौरान भारित औसत निवल बिक्री कीमत 2004-05 में 63% तक 2005-06 में 62% तक तथा जांच अवधि के दौरान 67% तक गिर गई थी। प्रति इकाई लाभ, जो मूल वर्ष में 100 (सूचीबद्ध) था, 2004-05 में 41.55, 2005-06 में 72.07 तथा जांच अवधि के दौरान 22.48 के नुकसान में बदल गया। जांच अवधि के और अधिक विश्लेषण से पता चलता है कि अप्रैल-जून, 07 में प्रति इकाई नुकसान (प्रमुख उत्पादक का, जिसके आंकड़ों की जांच कर ली गई है) अत्यधिक बढ़ गया।

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि वार्षिकीकृत
नियोजित पूंजी (एनएफए)	लाख रुपए	***	***	***	***
पीबीआईटी	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	-35.21	-68	4
नियोजित पूंजी पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	-29	-78	4

64. नियोजित पूंजी उत्पादन की प्रति इकाई के अनुसार परिकलित की गई है और घरेलू बिक्री के लिए नियोजित पूंजी ज्ञात करने के लिए इसे घरेलू बिक्री मात्रा से गुणा किया गया है। नियोजित पूंजी से संबंधित आंकड़ों से पता चलता है कि मूल वर्ष की तुलना में इसमें 2004-05 में 19% तथा जांच अवधि के दौरान 13% की वृद्धि हुई। लगाई गई पूंजी पर आय आधार वर्ष में 100 (सूचीबद्ध) से घटकर जांच अवधि के दौरान 4 रह गई।

### रोजगार

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
कर्मचारी	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	119	130	154

65. घरेलू उद्योग की विनिर्माण इकाई में संबद्ध वस्तु तथा इस जांच में शामिल नहीं हुए अन्य उत्पादों, दोनों का विनिर्माण होता है। संयंत्र के लिए कर्मचारियों की संख्या समग्र रूप में की गई है। उपरोक्त आंकड़ों से पता चलता है कि मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में 54% की वृद्धि हुई है।

### उत्पादकता

66. विचाराधीन उत्पाद तथा अन्य उत्पादों के लिए विनिर्माण इकाई एक ही है अतः यह माना जाता है कि संबद्ध वस्तु हेतु प्रति कर्मचारी उत्पादन से घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में सही स्थिति का पता नहीं चलता है।

### माल सूचियां

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
औसत माल सूची	लाख नग	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	1100	2056	2270

67. उपरोक्त आंकड़ों से पता चलता है कि मूल वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान औसत मालसूची में लगभग 4 गुना वृद्धि हुई है। वर्ष 2003-04 में औसत मालसूची 12 बिक्री दिवसों के बराबर थी जो जांच अवधि के दौरान बढ़कर 150 दिन के बराबर हो गई।

### वृद्धि

68. मांग में वृद्धि से मूल वर्ष से जांच अवधि तक वर्ष-दर-वर्ष आधार पर सकारात्मक प्रवृत्ति दिखाई देती है। उत्पादन तथा बिक्री में वृद्धि सकारात्मक थी। तथापि लागत, बिक्री कीमत, लाभप्रदता और निवेश पर आय में ऋणात्मक प्रवृत्ति रही है।

## निवेश \*

69. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु और अन्य वस्तु की क्षमता में वृद्धि के लिए घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु हेतु और पूंजी लगाई थी ।

### पाटन की सीमा

70. पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति की सीमा के सूचक के रूप में पाटन की सीमा यह दर्शाती है कि उल्लिखित संबद्ध देशों हेतु निर्धारित पाटन मार्जिन जांच अवधि के दौरान अत्यधिक हैं ।

### ज.8 कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

71. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान बिक्री लागतों में गिरावट आई है । वर्ष 2004-05 से जांच अवधि बिक्री लागतों में 0.87 रुपए प्रति नग तक की गिरावट आई है । संबद्ध देशों से आयातित सामग्री की पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है जिससे भारतीय बाजार में कीमत कटौती हुई है । घरेलू और आयातित उत्पाद के बीच कीमत में भारी अंतर के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमत में कमी की गई है । घरेलू उद्योग को लगातार अपनी कीमतें घटाने के लिए बाध्य होना पड़ा है और कीमत में यह गिरावट उत्पादन लागत से भी कम हो गई है ।

### ज.9 क्षति मानदंडों से संबंधित निष्कर्ष

72. उपर्युक्त क्षति मानदंडों की जांच से यह ज्ञात होता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान मांग में वृद्धि 104% (वार्षिकीकृत) थी । इसी अवधि में घरेलू उद्योग का उत्पादन 21% बढ़ा, बिक्री में 89% वृद्धि हुई । तथापि औसत मालसूची भी 4 गुना बढ़ गई । घरेलू उद्योग का हिस्सा 2003-04 में 62.04% से घटकर जांच अवधि के दौरान 57.45% हो गया ।

73. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री की लागत घटकर 87 प्रतिशत रह गई, जबकि इसी अवधि में निवल बिक्री कीमत घटकर 67 प्रतिशत रह गई । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बिक्री लागत घटकर 0.88 रुपए प्रति नग रह गई, जबकि इसी अवधि में बिक्री कीमत भी घटकर 2.57 रुपए प्रति नग हो गयी, जिसने लाभप्रदता को प्रभावित किया । प्रति इकाई लाभ, जो आधार वर्ष में 100 (सूचीबद्ध) था, जांच अवधि के दौरान घाटे में बदलकर 22.48 हो गया । ब्याज पूर्व लाभ (पीबीआईटी), जो आधार वर्ष में 100 (सूचीबद्ध) था, जांच अवधि में घाटे में परिवर्तित होकर 4 रह गया । इसी प्रकार निवेश से आय जो आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान तेजी से घट गई ।

74. उपर्युक्त आर्थिक मापदंडों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

#### ज.10 अन्य ज्ञात कारक एवं कारणात्मक संबंध

75. प्राधिकारी ने अन्य कारकों से हुई क्षति, यदि कोई हो, को अलग करने के लिए कारणात्मक संबंध तथा नियमावली में यथा निर्धारित अन्य असंबंधित कारकों की भी जांच की है। इस संबंध में नियमावली में निर्धारित निम्नलिखित संकेतात्मक कारकों की जांच की गई है।

##### i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा एवं कीमत

76. जांच अवधि के दौरान अन्य देशों, जो जांच में शामिल नहीं हैं, से आयात अत्यधिक है और संबद्ध देशों की आयात कीमतों से अधिक कीमतों पर किए गए हैं। कुछ अन्य देशों के आयातों जिन पर पाटित आयातों के प्रभाव को दूर करने के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है, को घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला कारक नहीं माना जा सकता।

##### ii) मांग में कमी, खपत की पद्धति में परिवर्तन तथा प्रौद्योगिकी का विकास

77. प्रौद्योगिकी में आगे और विकास तथा बाजार में नए उत्पाद के कारण संबद्ध वस्तु की खपत पद्धति में इस उत्पाद के पक्ष में परिवर्तन हो रहा है। तथापि, भारत में जांच अवधि के दौरान भारत में संबद्ध वस्तु ने उल्लेखनीय वृद्धि प्रदर्शित की है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की कुल मांग में 155% वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

##### iii) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

78. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उद्योग में ऐसा कोई प्रतिबंधात्मक व्यवहार प्रचलन में नहीं है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण माना जा सके।

##### iv) निर्यात निष्पादन

विवरण	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
निर्यात बिक्री	लाख नग	11,440	13,553	13,940	15,610	12,488
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	118	122	136	109

79. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा वर्ष 2005-06 तक बढ़ती रही, तथापि पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 10.4% की गिरावट आई। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि निर्यात निष्पादन में गिरावट के कारण घरेलू बिक्री



हेतु उपलब्ध स्टॉक में वृद्धि हो गई है। परंतु घरेलू उद्योग मांग में अपने बाजार हिस्से को बनाए नहीं रख सका। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि क्षति अवधि हेतु वित्तीय कार्य निष्पादन का विश्लेषण केवल घरेलू बिक्री के संदर्भ में ही किया गया है। अतः निर्यात निष्पादन में गिरावट को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है।

#### v) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

80. प्रति कर्मचारी उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता का आकलन नहीं किया जा सकता क्योंकि संबद्ध वस्तु और जांच से इतर अन्य वस्तु का विनिर्माण एक समान विनिर्माण सुविधा के तहत किया जाता है।

81. ऐसा कोई अन्य कारक प्राधिकारी की जानकारी में नहीं आया है जिसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संभावित कारण माना जा सके।

#### ज.11 कारणात्मक संबंध

82. घरेलू उद्योग अन्य देशों से पाटित आयातों का सामना कर रहा था, जिसके लिए दिनांक 6.10.2006 से पाटनरोधी शुल्क लगाए गए थे। पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद पाटित आयात अन्य देशों से आने शुरू हो गए, अतः घरेलू उद्योग ने इस जांच का अनुरोध किया। उपर्युक्त विश्लेषण यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में दोनों रूपों में अर्थात् निरपेक्ष रूप से तथा मांग के हिस्से के रूप में वृद्धि हुई है। मांग में भारी वृद्धि के बावजूद संबद्ध देशों से बढ़ते आयातों ने घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से को अत्यधिक विस्थापित कर दिया है। वर्ष 2006-07 के दौरान संबद्ध देशों से भारत औसत पहुंच मूल्य 4.04 रुपये प्रति नग था जो अप्रैल, 2007 से जून, 2007 के दौरान घटकर 3.58 रुपये प्रति नग हो गया। इसी अवधि में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत में भी 0.80 रुपये प्रति नग की गिरावट आई। संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग में अत्यधिक कीमत कटौती व कम कीमत पर बिक्री हुई, जिसके कारण घरेलू उद्योग अपनी कीमतें आयात कीमतों के अनुरूप रखने पर विवश हो गया, जो यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग अपनी कीमतें घटाने पर विवश हो गया।

83. उपर्युक्त जांच के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तु का आयात उसके सामान्य मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत तथा घरेलू उद्योग की संबद्ध वस्तु की औसत निवल बिक्री प्राप्ति से कम कीमत पर किया गया है और उससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है जिससे संबद्ध वस्तु के पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई कारणात्मक संबंध का पता चलता है।

#### 1. निष्कर्ष

84. उपरोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:

क. संबद्ध देशों से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है;

- ख. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;  
ग. यह क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है ।

ज. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

85. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है और भारतीय बाजार में ऐसी खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल करना है जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

ट. सिफारिशें

86. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयात पर नीचे विनिर्दिष्ट विधि एवं ढंग से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं ।

87. प्राधिकारी द्वारा अनुसरण किए गए कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए पाटन मार्जिन एवं क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की अनुशंसा करते हैं । तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर केन्द्रीय सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है ।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	टैरिफ मद	वस्तु का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	8523.90.50	कॉम्पैक्ट डिस्क रिकॉर्डेबल (सीडी-आर) एक बार लिखे बार-बार-पढ़ें	थाइलैंड	थाइलैंड	मै. पेन स्टार इलेक्ट्रॉनिक्स कं.लि.	मै. पेन स्टार इलेक्ट्रॉनिक्स कं.लि.	17.52.	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
2.	वही	वही	थाइलैंड	थाइलैंड	उपर्युक्त क्र.सं. 1 से भिन्न उत्पादक और कोई संयोजन		17.52	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
3.	वही	वही	थाइलैंड	थाइलैंड से भिन्न कोई	कोई	कोई	17.52	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
4.	वही	वही	संबद्ध देशों से भिन्न अन्य कोई देश	थाइलैंड	कोई	कोई	17.52	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.

5.	वही	वही	वियतनाम	वियतनाम	मै. राइटिक वियतनाम कं.लि.	मै. राइटिक वियतनाम कं.लि.	46.94	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
6.	वही	वही	वियतनाम	वियतनाम	उपयुक्त क.सं. 5 से भिन्न उत्पादक और निर्यातक का कोई संयोजन		46.94	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
7.	वही	वही	वियतनाम	वियतनाम से भिन्न अन्य कोई देश	कोई	कोई	46.94	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
8.	वही	वही	संबद्ध देशों से भिन्न अन्य कोई देश	वियतनाम	कोई	कोई	46.94	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
9.	वही	वही	कोरिया आरओके	कोरिया आरओके	मै. न्यूस्टार डिजीटल	मै. न्यूस्टार डिजीटल	53.38	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
10.	वही	वही	कोरिया आरओके	कोरिया आरओके से भिन्न अन्य कोई देश	कोई	कोई	53.38	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
11.	वही	वही	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	कोरिया आरओके	कोई	कोई	53.38	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
12.	वही	वही	ईरान	ईरान	कोई	कोई	51.92	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
13.	वही	वही	ईरान	ईरान से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	51.92	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
14.	वही	वही	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	ईरान	कोई	कोई	51.92	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
15.	वही	वही	मलेशिया	मलेशिया	कोई	कोई	45.11	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
16.	वही	वही	मलेशिया	मलेशिया से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	45.11	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
17.	वही	वही	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	मलेशिया	कोई	कोई	45.11	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
18.	वही	वही	यूएई	यूएई	कोई	कोई	63.84	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
19.	वही	वही	यूएई	यूएई से इतर अन्य कोई देश	कोई	कोई	63.84	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.
20.	वही	वही	संबद्ध देशों से इतर अन्य कोई देश	यूएई	कोई	कोई	63.84	प्रति 1000 नग	अम.डॉ.

उपर्युक्त के अध्यक्षीन, प्राधिकारी दिनांक 13 दिसंबर, 2007 के प्रारंभिक जांच परिणामों की पुष्टि करते हैं, तथापि उपर्युक्त पैरा 87 में अनुशंसित शुल्क सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 9 (2) के अनुसार अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की तारीख से लागू होगा।

88. केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद इन जांच परिणामों के विरुद्ध कोई अपील 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ नियमावली, 1995 के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

## MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 6th March, 2009

### Final Findings

**Subject : Final Findings of Anti-Dumping Investigations on import of Compact Disc-Recordable (CD-R) from Iran, Malaysia, Korea ROK, Thailand, UAE and Vietnam.**

**No. 14/9/2007-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

#### A. Background and initiation:

1. Optical Disc Manufacturers Welfare Association (ODMWA), New Delhi (herein after referred to as the Applicant) has filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as this Authority), in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (herein after referred as Rules), alleging dumping of Compact Disc Recordable (CD-R) (herein after referred to as subject goods), originating in or exported from Iran, Malaysia, Korea ROK, Thailand, UAE and Vietnam (hereinafter referred to as subject countries) and requested for initiation of Anti Dumping investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods. The Authority notified the Embassies of Iran, Malaysia, Korea ROK, Thailand, UAE and Vietnam. The embassies of subject countries were notified about the receipt of fully documented petition as per Rule-5 (5).

2. The Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 12<sup>th</sup> September, 2007 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or

exported from the subject countries in accordance with sub-Rule 6(1) of the Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

3. The Authority notified its preliminary findings vide Notification dated 13<sup>th</sup> December 2007 recommending provisional anti-dumping duty on import of subject goods from the subject country and acting upon such recommendations of the Authority, the Department of Revenue, vide its notification No.34/2008-Customs dated 13<sup>th</sup> March, 2008 imposed provisional anti-dumping duty on the subject goods.

#### **B. Procedure**

4. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigations by the Authority:-

- I. The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 12.09.2007 to the Embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, importers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
- II. The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassies of subject countries in accordance with Rule 6(3) supra.
- III. The Embassies of the subject countries in New Delhi, were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters were also sent to Embassies of subject countries along with the names and addresses of the exporters.
- IV. The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information to the known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4). The Authority also sent questionnaire concerning Market Economy Treatment to exporters of Vietnam.
- V. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation.

- VI. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- VII. Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the petitioner on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out provisionally so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- VIII. k) In response to the Initiation Notification, responses were filed by the under mentioned three exporters. Exporter at Sl. No.3 did not respond to the letters of the Designated Authority and rectified deficiencies. The response was highly deficient, therefore, the response has not been taken into consideration and exporter has been treated as non-cooperative. In respect of exporters at Sl. No.1 & 2, the information was verified from their original records and relevant information have been taken into consideration in this findings.
1. M/s Pan Star Electronics Co. Ltd., Thailand
  2. M/s. Ritek Vietnam Co. Ltd., Vietnam
  3. M/s. Newstar Digital, S. Korea
- IX. l) Other exporters and importers who have not submitted information have been treated as non-cooperating exporters and importers
- X. m) The Designated Authority sent copies of preliminary findings dated 13<sup>th</sup> December 2007 to all known interested parties including, the responding importers and users of the subject goods, Embassy of the subject countries in India, and the domestic industry and invited the comments of the interested parties on the preliminary findings. Parties to this investigation were requested to make their views known in writing within 40 days of the notification of the preliminary findings.
- XI. n) The Authority held a public hearing on 4<sup>th</sup> March, 2008 to provide an opportunity to all interested parties to present their view. Oral submissions made by the parties during the public hearing reproduced in writing have been taken on record for the purpose of this investigation.
- XII. In accordance with Rule 16 of Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received thereon have also been duly considered in the findings.
- XIII. Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2006 to 30th June 2007 (POI). The examination of trends in the context of injury

analysis covered the periods from April 2003-March 2004, April 2004-March 2005, April 2005-March 2006 and the POI.

- XIV. The confidentiality claims of domestic industry in respect of the data submitted by them have been examined. The data concerning costing, customers, prices have been treated as confidential. The information relating to volume of subject goods for the period of investigation has not been treated confidential. The information submitted by exporters as confidential has been kept confidential.
- XV. \*\*\* in this finding represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

### **C. Product under Consideration**

5. The product under consideration in this investigation is 'Compact Disc-Recordable (CD-R).

6. The CD-R is a polycarbonate disc. A polycarbonate disc contains a spiral groove on one side to guide the laser beam for writing and reading information. The disc is coated on the side with the spiral groove with a very thin layer of vegetable-based organic dye and subsequently with a thin, reflecting layer of silver, a silver alloy or gold. Finally a protective coating of a photo-polymerizable lacquer is applied on top of the metal reflector and cured with UV-irradiation. Recording on such a disc can be done only once and, therefore, the disc is said to be of the type 'WORM' (Write Once Read Many Times). The disc is an optical storage medium for digital data or music.

**Mastering:** A process of forming a master for optical disks, generally referred to as "mastering", is where a nickel or the like metallic master, i.e., "stamper", is formed at its final step. A large number of optical disks are duplicated with use of the stamper as a mold in a succeeding molding process.

**Moulding:** First comes a polycarbonate plastic substrate containing a shallow spiral groove extending from the inside to the outside diameter of the disc.

**Dye Coater:** In this section an organic dye recording layer (AZO) is applied on blank substrate. This layer acts as recording layer. Dye is applied using spin coating and the metal layers by means of DC sputtering.

**Sputter (Metallizing):** A metal reflective layer is applied on disc (silver).

**Bonding:** An adhesive then bonds a recording and dummy side (for a single-sided) together into the final disc. Some single-sided discs are also topped on the dummy side with decorations or additional layers that provide surfaces suitable

for labeling by inkjet, thermal transfer or re-transfer printers. Bonding is done by using a hot melt, UV cationic or free radical process

**Printing:** Then required printing design is applied by screen printing method.

**Construction of CD-R:** To allow information to not only be written but also re-written many times over, CDR-RW, CDR+RW) disc construction is more complex than that of CDR-R and CDR+R (recordable). Just like a recordable disc, a rewritable disc a single side. The recording side of a rewritable disc also uses multiple layers beginning with a polycarbonate plastic substrate containing a shallow spiral groove extending from the inside to the outside diameter of the disc.

7. Next comes a dielectric layer (zinc sulfide and silicon dioxide), followed by a phase-change alloy recording layer (either indium, silver, tellurium and antimony or germanium, tellurium and antimony); another dielectric layer and a metal reflective layer (silver, silver alloy, aluminum). Additional layers may also be incorporated above or below the dielectric layers (germanium nitride, silicon carbide, silicon dioxide, silicon nitride, zinc sulfide, antimony telluride and others).

8. The dummy side consists of a flat polycarbonate plastic substrate sometimes with an additional metal layer. An adhesive then bonds the sides together into a single disc.

9. The product is classified under ITC (HS) and Customs Classification No.8523. The product is import of the subject products is being made under Chapter 8523 of the Customs Classification with the following subheading: 85239050.

However the above classification is indicative only and is no way binding on the investigation.

#### **D. Like Article**

10. The domestic industry manufactures 'CD-R', which is identical to the product under consideration. The goods originating in or exported from the subject countries and produced by the domestic industry are comparable in terms of physical & technical characteristics, functions and uses. The two are technically and commercially substitutable. Therefore, for the purpose of the present investigation, Compact Disc- Recordable produced by the domestic industry is being treated as like article to Compact Disc- Recordable imported from subject countries within the meaning of the Anti Dumping Rules.



### **E. Standing of the Domestic Industry and Initiation of the Investigation**

11. The application has been filed by Optical Disc Manufacturers Welfare Association, New Delhi, (ODMA) comprising of 8 producers of the subject goods in India. Three producers of the subject goods and members of ODMA have joined the application as the applicants and other four members of ODMA have supported the petition. Therefore, domestic producers expressly supporting the application account for more than 90% of the domestic production of the subject goods in India. Further, the three companies who joined the application constitute domestic industry within the meaning of the Rules.

### **F. Submission made by interested parties**

12. Provision of application under Rule 6(3) - M/s Ritek Vietnam Company Limited has stated that as per Rule 6, it was obligatory for the Designated Authority provide full text of updated application to the known exporters that formed the basis of initiation. The Authority notes that the copies of the application were provided to exporters and Govt. of the subject countries as required under Rule 6 (3). Further information and evidence (non-confidential version) were made available by keeping the same in public file, which were open to inspection by all interested parties.

13. **Retrospective Imposition of Duty as per Section 9A(3)** - The domestic industry at the time of initiation requested that the anti-dumping duty may be imposed retrospectively as per Section 9A(3) of the Customs Tariff Act. The same was objected to by M/s Ritek Vietnam Company Limited. However, subsequently, before issue of Disclosure Statement, the domestic industry withdrew their request for retrospective imposition of the duty. The Authority in view of the request of the domestic industry has not decided about the retrospective imposition of the duty on merit.

14. After Disclosure Statement, it has been represented by APJ-SLG on behalf of M/s Panstar Electronic Co. Ltd. and M/s Ritek Vietnam Co. Ltd. that "approach proposed disclosure statement is contrary to law and is in total variance to the approach adopted in identical circumstances in other cases". In this regard, attention has been drawn to final findings of All Fully Drawn Yarn (final findings dated 26.12.2006), Silk Fabrics (dated 15.11.2006), Viscose Filament Yarn (4.4.2006) and Polyvinyl Chloride (26.12.2007). It has also been stated that "no reasons for such drastic change in approach are indicated in the disclosure made". It has been further submitted that approach in this case would tantamount to rejection of the concept of "Export Price" having larger implications for all the current and future cases.

15. The Authority has noted the submissions by APJ-SLG on behalf of M/s Panstar Electronic Co. Ltd. and M/s Ritek Vietnam Co. Ltd. and is of the view

that facts and circumstances in this investigation under which "Export Prices" disclosed by exporters have been rejected are discussed in Section G of this findings and were also disclosed in the disclosure statement. However, it is further clarified that when elements of collusion between exporters and importers come to notice of Authority, export prices cannot be accepted as such.

### **G. Methodology for calculation of dumping margin**

#### **Normal Value**

##### **G.1 Normal Value for Thailand**

16. In response to the initiation notification one exporter from Thailand namely M/s Pan Star Electronics Co. Ltd., filed the information on the exporter questioner. The information was verified from the record of the exporter.

17. For determining normal value, the Authority has examined the data on domestic sales and cost of production provided by M/s Panstar Electronic Co. Ltd. On examination It has been found that only 45% of the domestic sales was profitable. Therefore, for calculating the normal value only profitable sales transactions have been taken into consideration. Expenses claimed by the exporter has been adjusted to arrive at ex-factory price. It has been noted that the exporter has exported the goods to India only under one type of packing. By taking these facts into accounts, the weighted average normal value has been calculated as \$\*\*\* per 1000 pieces.

##### **G.2 Normal Value for Korea ROK**

18. In response to the initiation notification one exporter from Korea ROK namely M/s Newstar Digital filed the information on the exporter questioner. However, the information was found to be highly deficient and the deficiencies were not rectified by the exporter. Therefore, the same has not been taken into consideration.

19. The normal value for Korea ROK has been constructed on the basis of facts available as per Rule 6(8) of Anti-dumping Rules by taking into account the international price of the raw materials and consumption, conversion cost of the major producer of the domestic industry. A profit @ 5% has been added to determine the normal value. By this methodology, the normal value for Korea ROK has been calculated as \$ \*\*\* per 1000 pieces.

##### **G.3 Normal Value for Vietnam**

20. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption by treating Vietnam as a non-market economy country for purposes of an anti dumping investigation. Upon initiation, the Authority advised the Vietnamese

producers to respond to the notice of initiation and provide relevant information for determination of their market economy status. Subsequently, taking into account the submissions by interested parties, Thailand was selected as third market economy country in accordance with para 7 of Annexure 1 of the Rules in case the cooperating exporter fails to get market economy treatment.

21. The Authority sent copies of the questionnaire to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c) and Annexure-I to the Rules. In response to questionnaires, M/s Ritek Vietnam Co. Ltd. provided information for rebutting the presumption of non-market economy.

#### **G.4 The market economy status of M/s Ritek Vietnam Co. Ltd.**

22. The cooperating exporter M/s Ritek Vietnam Co. Ltd. provided all the information as was called to rebut the presumption of non-market economy. For the product under consideration, in respect of ownership and critical decision making concerning prices, costs inputs and production, the Authority did not find any indication about the state interference. As the exporter has set up a new unit, therefore, any distortion carried over from former non-market economy system also could not be detected. Other parameters as provided in Para 8 (3) of Rules were also examined. However, no material came to notice of Authority indicating that the exporter has not been working in accordance with market economy signals. The Authority therefore has granted market economy status to the exporter for the purpose of this investigation.

23. It has been noted that no domestic sales has been made by the exporter during the period of investigation. The normal value therefore has been constructed in accordance with Section 9A(1) (C) of the Customs Tariff Act on the basis of data of the cost of production provided by the cooperating exporter. By this methodology, the normal value has been calculated as \$\*\*\* per 1000 pieces.

#### **G.5 Normal Value for Iran**

24. No exporter from the Iran has responded to the Initiation Notification. In absence of any response, the Authority has relied on the facts available as per Rule 6(8) of the Anti-dumping Rules to determine the normal value. For this purpose, normal value has been constructed by taking into account the international price of the raw materials and consumption, conversion cost of the major producer of the domestic industry. A profit @ 5% has been added to determine the normal value. By this methodology, the normal value for Iran has been determined as US\$\*\*\*per 1000 pcs.

### **G.6 Normal Value for Malaysia**

25. No exporter from the Malaysia has responded to the Initiation Notification. In absence of any response, the Authority has relied on the facts available as per Rule 6(8) of the Anti-dumping Rules to determine the normal value. For this purpose, normal value has been constructed by taking into account the international price of the raw materials and consumption, conversion cost of the major producer of the domestic industry. A profit @ 5% has been added to determine the normal value. By this methodology, the normal value for Malaysia has been determined as US\$ \*\*\* per 1000 pcs.

### **G.7 Normal Value for UAE**

26. No exporter from the UAE has responded to the Initiation Notification. In absence of any response, the Authority has relied on the facts available as per Rule 6(8) of the Anti-dumping Rules to determine the normal value. For this purpose, normal value has been constructed by taking into account the international price of the raw materials and consumption, conversion cost of the major producer of the domestic industry. A profit @ 5% has been added to determine the normal value. By this methodology, the normal value for UAE has been determined as US\$ \*\*\* per 1000 pcs.

### **Export price**

### **G.8 Export price for Thailand**

27. The exporter has provided the transaction-wise details of exports to India. The data was verified from the record of the exporter. During the verification, it was noticed that the payment for the export transactions by the exporter has been received not only in more than one installment but also from different sources. On examination and comparison of data provided by the exporter and imports data by the DGCI&S, it was noted that there was a considerable difference in the prices shown by the exporter and imports made into India. The comparison table for some of the transactions was sent to the exporter for their comments. In reply, it was stated that the exporter was not in position to comment upon the data compiled by the Indian authorities. The differences in prices reported by exporter and recorded in India indicate that importers might have been declaring lower prices to the custom authorities in India. The collusion between exporter and importer cannot be ruled out in view of the fact that exporter has received payment in installments and from the more than one source for the same transactions. It has also been noted that the total quantity exported by the exporter during POI and the total quantity of imports made in India during POI from Thailand is comparable. It indicates that the entire imports were accounted for by the cooperating exporter from Thailand.

28. In view of the above, the Designated Authority has not accepted the export price declared by the exporter and instead has relied on the weighted average of value reported in India. However, the expenses disclosed by the exporter have been taken into account to determine ex-factory export price. By this methodology, the net export price has been calculated as \$\*\*\* per 1000 pieces.

#### **G.9 Export price for Korea ROK**

##### **Export price for the Non-cooperating exporters**

29. As no exporter from Korea has cooperated, therefore, the export price for non-cooperating exporters has been determined on the basis of data sourced from Impex Statistics. In this regard, the transaction-wise imports data provided by Impex Statistics have been relied upon. The adjustments on account of ocean freight, marine insurance, commission, inland freight, port expenses and bank charges have been made to determine the net export price. By above methodology, the net export price has been calculated as US\$ \*\*\* per 1000 pcs.

#### **G.10 Export price for Vietnam**

30. The exporter has provided the transaction-wise details of exports to India. After preliminary findings, it was clarified that M/s Ritek Vietnam Co. Ltd (RVC) ship the goods to India directly from Vietnam, however, the sales transactions were made through Chinese Taipei by Ritek Corporation, Taiwan (RCT), a related company. For this purpose, RVC made sales to RCT which in turn sold the goods to Indian customers. During verification, it was noted that there were some discrepancies in data provided. It was also noted that for some transactions payment voucher were either not available or not connected to the sales transactions. It has also been noted that there is a considerable difference in the export prices reported by the exporter and reported in India. The total quantity reported by the cooperating exporter is much higher than that reported by the Indian authorities for imports from Vietnam. The difference in prices reported by exporter and recorded in India indicates that importers might have been declaring lower prices to the custom authorities in India. The collusion between exporter and importer cannot be ruled out in view of the fact that exporter could not account for payment for some transactions. In view of the aforesaid, the export price reported by the exporter cannot be relied upon. For the purpose of export price, the quantity and values reported in the imports data have been relied upon. However, the expenses disclosed by the cooperating exporter have been taken into account to calculate the ex-factory export price. By this methodology, the net export price has been calculated as US\$ \*\*\* per 1000 pcs.

**G.11 Export price for Iran**

31. For non-cooperating exporters, the transaction-wise imports data provided by Impex Statistics have been relied upon. The adjustments on account of ocean freight, marine insurance, commission, inland freight, port expenses and bank charges have been made to determine the net export price. By above methodology, the net export price has been calculated as US\$ \*\*\* per 1000 pcs.

**Export price for Malaysia**

32. For non-cooperating exporters, the transaction-wise imports data provided by Impex Statistics have been relied upon. The adjustments on account of ocean freight, marine insurance, commission, inland freight, port expenses and bank charges have been made to determine the net export price. By above methodology, the net export price has been calculated as US\$ \*\*\* per 1000 pcs.

**G.12 Export price for UAE**

33. For non-cooperating exporters, the transaction-wise imports data provided by Impex Statistics have been relied upon. The adjustments on account of ocean freight, marine insurance, commission, inland freight, port expenses and bank charges have been made to determine the net export price. By above methodology, the net export price has been calculated as US\$ \*\*\* per 1000 pcs.

**G.13 Dumping Margin**

34. On the basis of normal values and export prices as determined above, the dumping margins are determined as per table below: -

Value in US\$ per 1000 Pcs.

	Thailand	Korea ROK	Vietnam	Iran	UAE
Normal Value	***	***	***	***	***
Export Price	***	***	***	***	***
Weighted Dumping Margin	***	***	***	***	***
Dumping Margin(%)	22.76	75.63	54.65	68.92	93.73

35. The dumping margins so determined are significant and above de minimis level.

## **H. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINKS**

### **H.1 Injury Determination**

36. For the purpose of injury analysis the entire imports from the subject countries have been treated as dumped imports.

### **H.2 Submissions by the Domestic Industry**

37. The domestic industry has raised the following arguments:

- (a) Imports of the product under consideration have significantly increased in absolute terms and in relation to production in India.
- (b) The average imports per month increased significantly even within the proposed period of investigation.
- (c) The imports are significantly undercutting the prices of domestic industry. Resultantly, imports were depressing the prices of the domestic industry in the market.
- (d) Even though capacity, production and sales increased over the period, the increase in these parameters was a result of significant increase in demand anticipated earlier for the product. However, the domestic industry lost market share.
- (e) Profitability of the domestic industry has significantly declined over the period because of significant price pressure created by the imports.
- (f) Return on investment and cash flow have also deteriorated significantly over the period. The domestic industry is faced with negative return.
- (g) Inventories with the domestic industry have increased significantly.
- (h) Injury to the domestic industry is being caused by the dumped imports considering that the only reason for reduction in selling price is the decline in import prices.

### **H.3 Examination by the Authority**

38. The Authority has noted the views expressed by the domestic industry and examined the mandatory factors for the purpose of injury determination and causal link analysis in these findings.

#### **H.4 Cumulative assessment of injury**

39. The Annexure II (iii) of the Anti Dumping Rules requires that where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti dumping investigations, the designated authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that

- (a) The volume of imports from individual countries are above de minimis;
- (b) The dumping margin against individual countries is above 2%; and
- (c) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles

40. The Authority notes that the dumped imports are entering the Indian market simultaneously from several countries, including the subject countries. Therefore, the issue of cumulative assessment of the injury caused to the domestic industry due to dumped imports from these sources has been examined with respect to the above parameters and it was observed that:

- i) The margins of dumping of individual products from each of the subject countries are more than the de minimis limit;
- ii) The volume of imports of individual products from each of the subject countries is more than the de minimis;
- iii) Imports from the subject countries are significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market;

41. In view of the above, the Authority propose that cumulative assessment of injury is appropriate in this case as the exports of individual products from the subject countries are directly competing amongst themselves as well as with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market.

#### **H.5 Examination of Injury and Causal Link**

42. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure –II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.



43. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the rules supra.

44. All economic parameters affecting the Domestic Industry as indicated above such as production, capacity utilization, sales volume etc. have been examined as under.

#### H.6 Volume Effects of Dumped Imports: Import volumes and market shares

##### a) Import Volumes

45. The CD-R is specifically is importable under Customs Tariff Head 8923.90.50, however, the transaction-wise data of imports from Impex Statistics shows that the imports have been made under different custom tariff heads. In the data provided by DGCI&S, the imports made under other than the dedicated classification have not been captured, therefore, data from Impex Statistics have been relied upon for analysis.

46. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

47. For the purpose of injury analysis the Authority has relied on transaction wise import data procured from Impex statistics data. Volume of imports of the subject goods from the subject countries have been analysed based on the data reported in the Impex statistics data after pruning the data for unrelated products. It has also been observed that imports were made in various packing i.e. Cake box and BOS. However, main imports were in pack of BOS.

48. Volume of imports of the subject goods from the subject countries have been analysed as under: -

##### Import Volumes and share of subject country

	Units	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annualised
Imports						
Iran	Lac.Pcs	-	-	-	73	59
Korea	Lac.Pcs	10	14	13	92	74
Malaysia	Lac.Pcs	102	73	38	244	185
Thailand	Lac.Pcs	4	4	7	302	242

UAE	Lac.Pcs	0	3	7	81	64
Vietnam	Lac.Pcs	-	-	-	397	317
Countries Already Attracting Duty		957	1,740	1,350	1,249	999
Other countries	Lac.Pcs	25	82	28	10	8
Subject Countries	Lac.Pcs	116	94	65	1,189	951
Trend	Indexed	100	81	56	1,027	822
Total Imports	Lac.Pcs	1,097	1,916	1,442	2,447	1,958
Trend	Indexed	100	175	131	223	178
Market Share						
Iran	%	-	-	-	3.00	2.40
Korea	%	0.91	0.75	0.93	3.76	3.01
Malaysia	%	9.26	3.80	2.62	9.98	7.99
Thailand	%	0.36	0.21	0.49	12.34	9.87
UAE	%	0.02	0.17	0.46	3.29	2.63
Vietnam	%	-	-	-	16.21	12.97
Countries Already Attracting Duty	%	87.20	90.83	93.59	51.03	51.03
Other countries	%	2.24	4.25	1.91	0.39	0.39
Subject Countries	%	10.55	4.92	4.50	48.58	48.58
Imports in relation to						
Production	%	7.23	10.10	7.90	10.67	10.67
Consumption	%	38.68	44.41	32.78	36.57	36.57

49. The data shows imports from subject countries increased from 116 lacs in 2003-04 to 951 lacs during POI (annualised) indicating sharp increase in imports during POI as compared to base year. Import data shows that imports mainly constitutes CDR-R. Imports of CDR-RW was in the range of 1% of the total imports. It has also been observed that imports of CDR was made in different packed forms. However, mainly imports constitutes CDR in bulk package which was 95% of the total imports. The other packages was in Cake Box. It has been observed that imports have increased in absolute term, however, in relation to production and consumption it has marginally increases from 04-05 to POI.

## b) Demand, Output and Market shares

Sales of Domestic Industry

(iii)

**i) Growth In Demand**

Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annualised
Domestic Industry	Lac Pcs 2,836.82	4,314.34	4,399.48	6,692.35	5,353.68
Total Imports	Lac Pcs 1,097.31	1,915.70	1,442.20	2,447.45	1,957.96
Other Indian producer	Lac Pcs 628.12	1,006.97	1,491.42	2,510.87	2,008.70
Total Demand	Lac Pcs 4,572.25	7,237.01	7,338.10	11,650.67	9,320.54

50. Demand of subject goods has been determined by addition of domestic sales of Indian Industry and imports from all countries. From the data trend indicates that demand for the subject goods has been growing from base year to POI. The product itself is of a recent origin hence the demand for the product is increasing rapidly.

**ii) Production of the Domestic Industry**

Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annualised
Capacity	Lac.Pcs 18,800	20,311	18,922	25,623	20,499
Trend	Indexed 100	108.04	100.65	136.29	109.04
Production	Lac.Pcs 15,181	18,972	18,246	22,944	18,356
Trend	Indexed 100	124.97	120.19	151.14	120.91
Capacity Utilisation	% 80.75	93.41	96.45	89.55	89.55
Trend	Indexed 100	115.67	119.42	110.89	110.89

51. Data of domestic industry on capacity, production and capacity utilisation reveals that the capacity of the domestic industry was 18800 Lac Pcs during 2003-04 and increased to 20499 Lac Pcs during annualised POI. The production of subject goods was 15181 Lac Pcs during 2003-04 after rising in 2004-05 declined to 18246 Lac. Pcs during 2005-06 and increased to 18356 Lac Pcs during annualised POI.

## iii) Sales of Domestic Industry

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annualised
Domestic Industry	Lac Pcs.	2,837	4,314	4,399	6,692	5,354
Export Sales	Lac Pcs.	11,440	13,553	13,940	15,610	12,488

52. The data on sales indicates that the domestic industry sold 2837 Lac.Pcs of subject goods during 2003-04 and the same increased to 5354 Lac.Pcs during annualised POI. The sale of domestic industry increases to 189% during POI as compared to base year. The average inventory of the domestic industry indicates that the average stock was 97 Lac.Pcs in 2003-04 and increased to 2205 Lac.Pcs during POI. Average inventory in term of number of days of sales it was equivalent to 12 days of sales in 2003-04 and rose to 150 days of sales during POI as compared to base year.

## iv) Demand and Market Share

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annualised
Assessed Demand	Lac.Pcs	4,573	7,237	7,333	11,651	9,321
Trend	Indexed	100	158.27	160.37	254.80	203.83
Imports from Subject Countries	Lac.Pcs	116	94	65	1,189	951
Imports from Countries attracting ADD	Lac.Pcs	957	1,740	1,350	1,249	999
Imports from Other Countries	Lac.Pcs	25	82	28	10	8
Sales of Domestic Industry	Lac.Pcs	2,837	4,314	4,399	6,692	5,354
Sales of other Indian producers	Lac.Pcs	638	1,007	1,491	2,511	2,009
Market Share in Demand						
Imports from Subject Countries	%	2.54	1.30	0.89	10.20	10.20
Imports from Countries attracting ADD	%	20.93	24.04	18.41	10.72	10.72
Imports from Other Countries	%	0.55	1.13	0.38	0.09	0.09
Sales of Domestic Industry	%	62.04	59.61	59.99	57.44	57.44

Sales of other Indian producers	%	13.95	13.91	20.33	21.55	21.55
Selling price of the domestic industry	Rs/PC	7.90	4.94	4.90	5.33	5.33

53. The demand of subject goods has shown rising trend. It grew by 104% during annualized POI as compared to the base year. The market share of domestic industry which was increasing till 2005-06 has been reduced in the POI. During the same period the share of subject countries has gone up from 2.54% to 10.20%. It has been observed that from base year to POI the selling price of the domestic industry declined from base year.

**(c) Price Effect of the Dumped Imports from subject countries on the Domestic Industry**

**(i) Evaluation of price over period under consideration or period under consideration**

Export Price	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Subject Countries	Rs./Pc	3.69	2.00	3.18	3.92
Trend	Indexed	100	54.20	86.18	106.23
Selling Price	Rs./Pc	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	62.54	62.00	67.38
Polycarbonate prices *	Rs/KG	79.08	87.53	128.55	127.09
Raw materials cost	Rs./Pc	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	85	116	90

\*Source:- World trade atlas data

54. The data on export price shows that prices from subject countries have declined from base year to POI. It has been observed from the data in the World Trade Atlas that during the same period, price of the major raw material i.e. polycarbonate has increased in the subject countries. Even if it is considered that the prices in 2003-04 were quite high because of introductory phase, it is found that the prices declined steeply even between 2004-05 and 2005-06. Further, even between investigation period and preceding year, the prices declined from base year.

**(ii) Price undercutting and underselling effects**

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Selling price-DI	Rs/ Pcs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	62.54	62.00	67.38
Landed value	Rs/ Pcs	4.02	2.08	3.18	3.92
Trend	Indexed	100	51.72	79.10	97.51
Price Undercutting	Rs/ Pcs	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
NIP	Rs/ Pcs.	***	***	***	***
Price underselling	Rs/ Pcs.	***	***	***	***
Cost of production	Rs/ Pcs.	***	***	***	***

55. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject countries have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject countries.

56. In determining the weighted net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

57. The trend of selling price indicates that it has decline to 63% in 2004-05, 62% in 2005-06 as compared to base year, however, it decline to 67% during POI as compared to base year. The analysis of selling price during POI (of the major producer of the domestic industry whose data has been verified) further reveals that the decline in selling price was pronounced during Apr.'07 – June'07 when it declined to 58% of the base year.

58. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject countries over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding (for the relevant years) 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the Impex statistics data of import prices from the subject countries. The weighted average undercutting from subject countries during POI was in the range of 22-32%.

59. For the purpose of price underselling determination the weighted average landed prices of imports from subject countries have been compared with the

non-injurious price of the domestic industry determined for the POI. The weighted average undermelling was in the range of 75-85% during POI.

(iii) Price suppression and depression effects of the dumped imports.

60. The price suppression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject countries.

61. The trend of cost of production shows that weighted average cost of sale declined by Rs.0.88/pc during POI as compared to base year whereas the selling price has declined by Rs.2.58/pc during the same period indicating that the domestic industry was under tremendous pressure to reduce the prices because of dumped imports.

#### H.7 Examination of other Injury Parameters

62. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and injury indicators like volume and value of imports, capacity output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows.

Profits and actual and potential effects on the cash flow					
	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Sales (NSR)	Rs./Pcs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	62.54	62.00	67.38
Cost of Sales	Rs./Pcs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	62.54	62.00	67.38
Profit before tax	Rs./Pcs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	-41.55	-72.07	-22.98
Total Profit before tax	Rs./lacs	***	***	***	***
Total Profit before interest	Rs./lacs	***	***	***	***
Cash profit	Rs./lacs	***	***	***	***

63. The data indicate that weighted average cost of production of the domestic industry declined to 85% in 2004-05, 91% in 2005-06 and 87% during POI as compared to base year whereas during the same period the weighted average

net selling price declined to 63% in 2004-05, 62% in 2005-06 and 67% during the POI. The profit per unit which was 100 (indexed) in the base year turned to loss of 41.55 in 2004-05, 72.07 in 2005-06 and 22.48 during POI. Further analysis of POI shows that loss per unit (of the major producer whose data has been verified) increased substantially in Apr-June'07.

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI Annualised
Capital Employed (NFA)	Rs.Lacs	***	***	***	***
PBIT	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	-35.21	-68	4
Return on capital employed	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	-29	-78	4

64. Capital employed has been calculated per unit of production and then the same is multiplied in to domestic sales volume in order to arrive at the capital employed for domestic sales. The data on capital employed shows that as compared to base year it increased by 19% in 2004-05, and 13% during POI. The Return on capital employed declined from 100 (indexed) in the base year to 4 in the POI.

#### Employment

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Employees	No	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	119	130	154

65. The manufacturing facility of the domestic industry manufacture both subject goods and other products not covered in this investigation. The number of employees has been taken for plant as a whole. The above data shows that number of employees has increased by 54% during POI as compared to base year.

#### Productivity

66. The manufacturing facility is common for product under consideration and other products and therefore, it is considered that productivity per employee would not appropriately reflect the position with regard to injury to the domestic industry.

#### Inventories

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Average Inventory	Lac Pcs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	1100	2056	2270



67. The above data shows that the average inventory increased approx. 4 times during POI as compared to base year. The average inventory was equivalent to 12 days of sales in 2003-04 and increased to equivalent of 150 days during POI.

### **Growth**

68. The growth in demand shows positive trend from base year to POI on year-to-year basis. The growth in production and sales were positive. However, cost, selling price, profitability and return on investment shows negative trend.

### **Investment**

69. The Authority notes that the domestic industry had infused fresh capital to increase the capacity for subject goods and other goods during the injury period.

### **Magnitude of Dumping**

70. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margins determined against the subject countries named, for the POI, are significant.

### **H.8 Factors affecting prices**

71. The Authority notes that the cost of sales declined during the injury period. From 2004-05 to POI, the cost of sales declined by Rs. 0.87/pc. Landed values of imported material from subject countries are significantly below the selling price of the domestic industry, causing price undercutting in the Indian market. Significant price difference between the domestic and imported product resulted in decline in the selling price by the domestic industry. The domestic industry was forced to reduce selling prices continuously and such price declines continued even below the cost of production.

### **H.9 Conclusion on injury parameters**

72. The examination of above injury parameters indicates that growth in demand was 104% during POI (annualized) as compared to base year. During the same period the production of the domestic industry grew by 21%, sales by 89%. However, the average inventory also grew by 4 times. The share of the domestic industry which was 62.04% in 2003-04 fell to 57.45% during POI.

73. The cost of sales has declined to 87% in POI as compared to base year whereas the net selling price declined to 67% during the same period. The cost

933 GI/09-7

of sales reduced by Rs.0.88/pc during POI as compared to base year where the selling price reduced by Rs.2.57/pc during the same period, impacting the profitability. The profit per unit which was 100 (indexed) in the base year turned to loss of 22.48 during the POI. The Profit Before Interest (PBIT) which was 100 (indexed) in the base year turned to 4 during POI. Similarly, the return on investment shows steep decline from base year to POI.

74. The analysis of above economic parameters indicates that the domestic industry has suffered material injury.

#### **H.10 Other Known factors and Causal Link**

75. The Authority has also examined the issue of causal link and other non-attribution factors as laid down in the Rules to segregate injury if any caused by other factors. In this regard the following indicative factors as laid down in the Rules have been examined.

##### **i) Volume and prices of imports from other sources**

76. During POI, imports from countries not under investigation are insignificant and at prices higher than the import prices from the subject countries. The dumped imports from some other countries already investigated are subjected to anti-dumping duty to offset the effect of dumped imports, therefore, cannot be considered as a factor causing injury to the domestic industry.

##### **ii) Contraction in demand, change in pattern of consumption and Development of technology**

77. Because of development of further technology and new product in the market, the consumption pattern of the subject goods is undergoing change in favour of this product. In India the subject goods have shown robust growth during the injury period. The total demands of subject goods have shown 155% growth during Period of Investigation as compared to the base year.

##### **iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers**

78. The Authority notes that there is no restricted practice prevalent in the industry which could be attributed to the injury to the domestic industry.

**iv) Export performance**

Particulars	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annualized
Export Sales	Lac Pcs.	11,440	13,553	13,940	15,577	12,488
Trend	Indexed	100	118	122	136	109

79. The Authority notes that the export volume of the domestic industry has been increasing till 2005-06, however, it declined by 10.4% during POI as compared to preceding year. The Authority also notes that because of decline in export performance, the available stock has increased for the domestic sales. However, the domestic industry could not retain the market share in demand. The Authority also notes that the analysis of financial performance for the injury period has been done for the domestic sales only. Therefore, decline in export performance cannot be considered as a factor causing injury to the domestic industry.

**v) Productivity of the Domestic Industry**

80. Productivity of the domestic industry in terms of production per employee could not be assessed as the subject goods and other goods not under investigation are manufactured under the same manufacturing facility.

81. No other factor, which could have possibly caused injury to the domestic industry, has come to the notice of the Authority.

**H.11 Causal Link**

82. The domestic industry was facing dumped imports from other countries for which anti-dumping duties were imposed on 6.10.2006. After imposition of anti-dumping duty, the dumped imports started coming from other countries for which the domestic industry requested for this investigation. The foregoing analysis indicates that the volume of dumped imports from the subject countries have increased substantially both in absolute terms as well as in relation to the share in demand. Despite strong growth in demand the growth of imports from subject countries have significantly displaced the market share of the domestic industry. The weighted average landed value from subject countries in 2006-07 was Rs.4.04/pc which declined to Rs.3.58/pc in Apr.07 to June 07. The net selling price of the domestic industry during the same period declined by Rs.0.80/pc. The landed value of dumped imports from the subject countries also show a significant price undercutting and underselling on the prices of the domestic industry compelling the domestic industry to benchmark its prices to imports indicating that the domestic industry was forced to reduce their prices.

83. On the basis of the above examination it is concluded that the subject goods exported from the subject countries are at prices below their normal values, Non Injurious Price of the domestic industry and the average net selling price sales realization of the subject goods of the domestic industry, and have caused injury to the domestic industry indicating causal links between dumping of subject goods and injury to the domestic industry.

#### **I. Conclusions**

84. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value;
- B. The domestic industry has suffered material injury;
- C. The injury has been caused by the dumped imports from subject countries.

#### **J. Indian industry's interest & other issues**

85. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

#### **K. Recommendations**

86. In view of the above, the Authority considers it necessary and recommends definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder

87. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, Definitive antidumping duty equal to the amount indicated in Column-8 of the table below is recommended to be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

## Duty Table

Sl. No	Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	8523.90.50	Compact Disc Recordable (CD-R) Write once read many times	Thailand	Thailand	M/s Panstar Electronics Co. Ltd.	M/s Panstar Electronics Co. Ltd.	17.52	Per 1000 pieces	US\$
2.	Do	Do	Thailand	Thailand	Any combination of producer and exporter other than at S. No. 1.		17.52	Per 1000 pieces	US\$
3.	Do	Do	Thailand	Any country other than Thailand	Any	Any	17.52	Per 1000 pieces	US\$
4.	Do	Do	Any country other than subject countries	Thailand	Any	Any	17.52	Per 1000 pieces	US\$
5.	Do	Do	Vietnam	Vietnam	M/s Ritek Vietnam Co. Ltd.	M/s Ritek Vietnam Co. Ltd.	46.94	Per 1000 pieces	US\$
6.	Do	Do	Vietnam	Vietnam	Any combination of producer and exporter other than at S. No. 5.		46.94	46.94	US\$
7.	Do	Do	Vietnam	Any country other than Vietnam	Any	Any	46.94	Per 1000 pieces	US\$
8.	Do	Do	Any country other than subject countries	Vietnam	Any	Any	46.94	Per 1000 pieces	US\$
9.	Do	Do	Korea ROK	Korea ROK	Any	Any	53.38	Per piece	US\$
10.	Do	Do	Korea ROK	Any country other than Korea ROK	Any	Any	53.38	Per 1000 pieces	US\$
11.	Do	Do	Any country other than subject countries	Korea ROK	Any	Any	53.38	Per 1000 pieces	US\$
12.	Do	Do	Iran	Iran	Any	Any	51.92	Per 1000 pieces	US\$
13.	Do	Do	Iran	Any country other than Iran	Any	Any	51.92	Per 1000 pieces	US\$
14.	Do	Do	Any country other than subject countries	Iran	Any	Any	51.92	Per 1000 pieces	US\$
15.	Do	Do	Malaysia	Malaysia	Any	Any	45.11	Per 1000 pieces	US\$

16.	Do	Do	Malaysia	Any country other than Malaysia	Any	Any	45.11	Per 1000 pieces	US\$
17.	Do	Do	Any country other than subject countries	Malaysia	Any	Any	45.11	Per 1000 pieces	US\$
18.	Do	Do	UAE	UAE	Any	Any	63.84	Per 1000 pieces	US\$
19.	Do	Do	UAE	Any country other than UAE	Any	Any	63.84	Per 1000 pieces	US\$
20.	Do	Do	Any country other than subject countries	UAE	Any	Any	63.84	Per 1000 pieces	US\$

Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 13<sup>th</sup> December, 2007, however duty recommended in para 87 above would be applicable from the date of imposition of provisional anti dumping duty as per Section 9A(2) of the Custom Tariff Act 1975.

88. An appeal against the findings after its acceptance by the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

R. GOPALAN, Designated Authority